Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 106 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, बुधवार 09 अक्टूबर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जो उत्पन्न हो रहा है उसका वितरण ठीक-ठाक होना चाहिये, उसमें देश सदा सुख शांति अनुभव करेगा।

Whatever is being produced must be distributed in a fair and equalitarian way so that the country will experience and happiness.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

हरियाणा में प्रचंड बहुमत से तीसरी बार बनेगी बीजेपी की सरकार, 48 सीटों के साथ बीजेपी की हैट्रिक

नायब सिंह सैनी फिर बन सकते हैं मुख्यमंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) की तीसरी बार जीत को विकास एवं सुशासन की राजनीति की जीत करार दिया। साथ ही हरियाणा के लोगों को भरोसा दिया कि वे उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। बीजेपी ने हरियाणा के इतिहास में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है।

भारतीय जनता पार्टी ने हरियाणा के चुनावी महाभारत में सत्ता विरोधी लहर को लेकर राजनीतिक पंडितों के अनुमानों को धत्ता बताते हुए ऐतिहासिक प्रदर्शन किया है। भगवा पार्टी ने लगातार तीसरी बार जीत हासिल की है। पिछले विधानसभा में राज्य में गठबंधन की सरकार चलाने वाली बीजेपी ने इस बार 90 सदस्यीय विधानसभा में अकेले 48 सीटों पर स्पष्ट बहुमत हासिल करके 10 साल बाद सत्ता में वापसी के मुख्य विपक्षी कांग्रेस के मंसूबों पर पानी फेर दिया है। कांटे के सीधे मुकाबले में भगवा पार्टी कांग्रेस पर भारी पड़ी। कांग्रेस 37 सीटों तक ही पहुंच पाई है। साल 2019 में हुए विधानसभा चुनाव में बीजेपी को 40 और कांग्रेस को 31 सीटें मिली थीं।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने मंगलवार को कहा कि हरियाणा में भाजपा की जीत और जम्मू-कश्मीर में अच्छा प्रदर्शन मोदी सरकार के शानदार कामकाज को दर्शाता है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल ने आगामी विधानसभा चुनावों के लिए उपमुख्यमंत्री अजित पवार को उनके गढ़ बारामती से उम्मीदवार बनाए जाने की औपचारिक घोषणा की, जिससे अजित के किसी अन्य निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने की अटकलों पर विराम लग गया।

आगामी चुनावों के लिए महायुति में सीट बंटवारे पर बातचीत के बारे में पटेल ने कहा कि एनसीपी को चुनाव लड़ने के लिए सम्मानजनक 60 सीटें मिलेंगी। उन्होंने कहा कि %महायुति% के सहयोगी 230 सीट पर सहमति पर पहुंच गए हैं और शेष सीट पर मतभेद सुलझा लिए जाएंगे। महायुति में एनसीपी, शिवसेना और बीजेपी शामिल हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हरियाणा में भाजपा के प्रदर्शन को किसानों, गरीबों, पिछड़ों, जवानों और युवाओं का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व पर अटूट विश्वास की जीत करार दिया और कहा कि राज्य की जनता ने जाति व क्षेत्र के आधार पर बांटने वाली कांग्रेस की नकारात्मक और विभाजनकारी राजनीति को पूरी तरह नकार दिया। बीजेपी ने हरियाणा के इतिहास में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और 48 सीटों पर जीत दर्ज की है। इससे पहले, बीजेपी ने 2014 के विधानसभा चुनाव में 47 सीट जीतकर पहली बार अपने बूते हरियाणा में सरकार बनाई थी। साल 2019 के चुनाव में उसे 40 सीट मिली थी। अपने वोट बैंक के लिए विदेश में जाकर देश का अपमान करने वालों को किसानों और जवानों की भूमि हरियाणा ने सबक सिखाया है। लगातार तीसरी बार भाजपा को प्रदेश की सेवा करने का अवसर देने के लिए हरियाणा की जनता का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की केंद्र और प्रदेश सरकार आपकी सभी आकांक्षाओं और आशाओं को पूर्ण करेगी।

चांदी का चम्मच लेकर पैदा होने वाले जाति का जहर फैला रहे: पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को हरियाणा विधानसभा चुनाव में मिली प्रचंड जीत के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आज हरियाणा में झूठ की घुट्टी पर विकास की गारंटी भारी पड़ी है। हरियाणा की जनता ने नया इतिहास रच दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हरियाणा में अब तक 13 चुनाव हुए हैं। इनमें से 10 चुनाव में हरियाणा के लोगों ने हर 5 साल के बाद सरकार बदली। लेकिन, इस बार हरियाणा के लोगों ने जो किया है, वो अभूतपूर्व है। पहली बार ऐसा हुआ है कि 5-5 साल के दो कार्यकाल पूरा करने वाली किसी सरकार को हरियाणा में फिर से मौका मिला है। पीएम मोदी ने कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि देश के अधिकतर हिस्सों में अब कांग्रेस के लिए नो एंट्री का बोर्ड लग चुका है। कांग्रेस की अब ऐसी हालत है कि पिछली बार कब सरकार की वापसी हुई है, पता ही नहीं। असम में एक बार जरूर उनकी सरकार की वापसी हुई थी, मगर इसके बाद वह कभी वापस नहीं आ पाई। देश में कई ऐसे राज्य हैं, जहां पर कांग्रेस 50-60 साल से सत्ता में वापस नहीं आ पाई है। उन्होंने कहा कि भाजपा दुनिया का सिर्फ सबसे बड़ा दल ही नहीं है, बल्कि भाजपा सबसे ज्यादा दिलों में भी बसी हुई है। हरियाणा में जनता ने विकास के मुद्दे पर भाजपा की हैट्रिक लगाई। भाजपा ने कांग्रेस के कुशासन से मुक्ति दिलाई, इसलिए गुजरात और मध्य प्रदेश की जनता दो दशक से भी ज्यादा समय से अपना आशीर्वाद बनाए हुए है। पीएम मोदी ने राहुल गांधी पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि चांदी का चम्मच लेकर पैदा होने वाले, जाति का जहर फैला रहे हैं। वो जाति के नाम पर लोगों को लड़वा रहे हैं। ये कांग्रेस ही है, जिसने दलित और पिछड़ों पर सबसे ज्यादा अत्याचार किया है।

छत्तीसगढ़ के औद्योगिक विकास व निवेश के प्रस्तावों पर केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल से चर्चा

केन्द्रीय मंत्री ने दिया आश्वासन, अधिकारियों को आवश्यक कदम उठाने के निर्देश

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज नई दिल्ली में केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल से मुलाकात की। बैठक में राज्य के औद्योगिक कॉरिडोर, अंतरराष्ट्रीय एयर कार्गो सुविधाओं और कई अन्य विकासात्मक मुद्दों पर चर्चा की गई। इस बैठक में केंद्रीय मंत्री ने छत्तीसगढ़ के विकास के लिए कई प्रस्तावों को मंजूरी देने का आश्वासन दिया है, जिससे राज्य को एक नई दिशा मिलेगी।

बैठक का मुख्य मुद्दा छत्तीसगढ़ के औद्योगिक कॉरिडोर का विकास था। मुख्यमंत्री साय ने केंद्र से अनुरोध किया कि कोरबा-बिलासपुर-रायपुर को नागपुर औद्योगिक कॉरिडोर से जोड़ा जाए। केंद्रीय मंत्री गोयल ने इस प्रस्ताव पर कहा कि इसे जल्द कार्यान्वित किये जाने का आश्वासन दिया. उन्होंने इस संबंध में भारत सरकार के अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई किए जाने का निर्देश भी दिया।

बैठक में मुख्यमंत्री ने रायपुर में अंतरराष्ट्रीय एयर कार्गो सुविधाओं की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि इससे राज्य के कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। मुख्यमंत्री ने बताया रायपुर के पुराने टर्मिनल का उपयोग इस सुविधा के लिए किया जा सकता है, जिससे निर्यात में आसानी होगी। केंद्रीय मंत्री गोयल ने इस पर सकारात्मक रुख दिखाते हुए जल्द मंजूरी देने का आश्वासन दिया। यह सुविधा राज्य के उद्योगों को वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने में मदद करेगी।

बैठक में एपीडा (कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण) सर्टिफिकेशन कार्यालय की स्थापना का मुद्दा भी उठाया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कार्यालय की स्थापना से छत्तीसगढ़ के कृषि उत्पादों को वैश्विक मान्यता मिलेगी, जिससे किसानों और

केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल के साथ मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की बैठक

- कोरबा-बिलासपुर-रायपुर को नागपुर औद्योगिक कॉरिडोर से जोड़ने का प्रस्ताव
- छत्तीसगढ़ में विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) को मंजूरी का दिया आश्वासन
- एपीडा सर्टिफिकेशन कार्यालय की स्थापना से छत्तीसगढ़ के कृषि उत्पादों को मिलेगी वैश्विक पहचान

उद्योगपतियों को लाभ होगा। केंद्रीय मंत्री ने इस प्रस्ताव पर कहा कि भारत सरकार इस पर हर संभव मदद करेगा। बैठक में रायपुर स्थित कॉनकोर कंटेनर डिपो की क्षमता बढ़ाने पर भी चर्चा हुई। मुख्यमंत्री साय ने बताया कि वर्तमान में डिपो की कुल क्षमता का केवल 15त्न उपयोग हो रहा है। उन्होंने केंद्रीय मंत्री से अनुरोध किया कि अधिक शिपिंग लाइनों को जोड़ा जाए, जिससे निर्यात लागत में कमी आएगी और व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। केंद्रीय मंत्री ने इस पर भी सकारात्मक रुख दिखाया और कहा कि जल्द ही शिपिंग मंत्रालय के साथ इस मुद्दे को हल किया जाएगा।

मुख्यमंत्री साय ने नवा रायपुर में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक कार्यक्रमों के आयोजन की भी मांग की। यह प्रस्ताव छत्तीसगढ़ को एक व्यापारिक और औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। केंद्रीय मंत्री गोयल ने इन सभी प्रस्तावों पर सहमति जताते हुए जल्द कार्यान्वयन का आश्वासन दिया। बैठक में छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव अमिताभ जैन, मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत, छत्तीसगढ़ के औद्योगिक वाणिज्य सचिव रजत कुमार, नई दिल्ली में छत्तीसगढ़ की इनवेस्टमेंट कमिश्नर ऋतु सैन, आवासीय आयुक्त भी उपस्थित थे।

आईटी और मल्टी-सेक्टर SEZ की स्थापना की मांग : मुख्यमंत्री साय ने नवा रायपुर में आईटी सेवा विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) और राज्य के अन्य ग्रोथ हब्स में मल्टी-सेक्टर सेज स्थापित करने का प्रस्ताव भी रखा। इसके लिए जांजगीर और राजनांदगांव में 400 एकड़ भूमि चिन्हित की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में छत्तीसगढ़ से कच्चे माल का निर्यात अन्य राज्यों में हो रहा है, जिसे रोकने और राज्य में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए यह कदम उठाया जा रहा है। केंद्रीय मंत्री ने इस परियोजना की व्यवहार्यता अध्ययन के साथ जल्द कार्यान्वयन की उम्मीद जताई।

नई औद्योगिक नीति 2024-29 की दी जानकारी : छत्तीसगढ़ सरकार ने अमृतकाल : छत्तीसगढ़ विजन@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने नई औद्योगिक नीति 2024-29 लागू करने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल को इस नीति के बारे में जानकारी दी, जिसमें औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करने, रोजगार के अवसर बढ़ाने और आर्थिक समृद्धि को हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस नीति का उद्देश्य छत्तीसगढ़ को एक समृद्ध और स्थायी आर्थिक वातावरण में बदलना है।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में NC-कांग्रेस गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिला

उमर अब्दुल्ला होंगे जम्मू-कश्मीर के नए सीएम

श्रीनगर (एजेंसी)। नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन ने जम्मू और कश्मीर विधानसभा चुनावों में 48 सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत हासिल कर लिया है। जम्मू और कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (जेके एनसी) ने मंगलवार को घोषित परिणामों में 42 सीटें जीतकर गठबंधन को जीत दिलाई। कांग्रेस केवल 6 सीटें जीत सकी। जम्मू और कश्मीर विधानसभा चुनाव में 90 सीटों पर मतदान हुआ। भाजपा ने भी मजबूत प्रदर्शन करते हुए 29 सीटें जीतीं।

पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की पीडीपी ने तीन सीटें हासिल कीं, जबकि सज्जाद गनी लोन की पीपुल्स कॉन्फ्रेंस और आम आदमी पार्टी ने एक-एक सीट जीती। सीपीआई (एम) ने भी एक सीट जीती। निर्दलीयों ने सात सीटें जीतीं। भाजपा को 25.64 फीसदी वोट मिले, उसके बाद नेशनल कॉन्फ्रेंस को 23.43 फीसदी और कांग्रेस को 11.97 फीसदी वोट मिले अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने और इसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने के बाद जम्मू-कश्मीर में यह पहला चुनाव था। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि नई सरकार लोगों की समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करेगी। वरिष्ठ अब्दुल्ला ने संवाददाताओं से कहा कि लोगों ने अपना जनादेश दिया है; उन्होंने दिखाया है कि वे 5 अगस्त को लिए गए फैसले को अस्वीकार करते हैं... उमर अब्दुल्ला मुख्यमंत्री होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य बेरोजगारी और मुद्रास्फीति जैसे मुद्दों को संबोधित करना है। मैं वोट देने वाले सभी लोगों का आभारी हूं। उमर अब्दुल्ला मुख्यमंत्री होंगे। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को हुए थे। एनसी और कांग्रेस दोनों ने संकेत दिया है कि राज्य का दर्जा बहाल करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों में भाजपा ने सत्ता बरकरार रखी है। है। इन नतीजों के जरिए हरियाणा ने कांग्रेस के संविधान और आरक्षण को लेकर दोहरे राजनीतिक चरित्र पर सीधी चोट की है। श्री देव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश तेजी से विकास के नित-नए आयाम गढ़ रहा है, विश्व-पटल पर अपनी प्रखर भूमिका का निर्वहन करते हुए 2047 तक विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति की दिशा में आगे बढ़ रहा है, हरियाणा के ये चुनाव नतीजे प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व पर जनता-जनार्दन के अटूट विश्वास की मुहर है। कांग्रेस जाति और धर्म के आधार पर जिस विभाजनकारी टूलकिटिया एजेंडे पर काम कर रही है, हरियाणा ने भी उसे पूरी तरह खारिज कर दिया है। भाजपा की ऐतिहासिक जीत को गांव-गरीब-किसान-मजदूर और युवाओं की जीत निरूपित करते हुए श्री देव ने कहा कि देश के अन्य राज्यों की तरह ही हरियाणा की जनता ने भी आज कांग्रेस रूपी अभिशाप से मुक्त रखकर विकास का मार्ग चुन लिया है।

जम्मू-कश्मीर में खुला आप का खाता, मेहर मलिक ने जीती डोडा सीट

जम्मू (आरएनएस)। जम्मू और कश्मीर में आम आदमी पार्टी ने एक विधानसभा सीट जीत ली है। पार्टी प्रत्याशी मेहराज मलिक ने डोडा सीट पर भाजपा उम्मीदवार गजय सिंह राणा को करीब 4,000 वोटों से हराया। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने इस जीत पर खुशी जताई।

उन्होंने एक्स पर लिखा, डोडा से आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार मेहराज मलिक द्वारा बीजेपी को हराकर शानदार जीत हासिल करने के लिए बहुत बहुत बधाई, आप बहुत अच्छा चुनाव लड़े। पांचवें राज्य में एमएलए बनने पर पूरी आम आदमी पार्टी को बधाई।

प्रधानमंत्री आवास के नाम पर नियम विरूद्ध कार्य करने पर होगी कड़ी कार्रवाई : प्रभारी मंत्री जायसवाल

आवास पूर्ण कर चुके हितग्राहियों का सांकेतिक गृह प्रवेश, सौंपा गया आवास एवं चाबी का डेमो

रायपुर (विश्व परिवार)। गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले के प्रभारी मंत्री एवं राज्य के स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के मुख्य आतिथ्य में आज मरवाही विकासखण्ड के ग्राम पंचायत डोंगरिया के शाला मैदान में जिला स्तरीय आवास मेले का आयोजन किया गया। मेले में नए स्वीकृत आवासों का भूमि पूजन तथा आवास पूर्ण कर चुके हितग्राहियों का सांकेतिक गृह प्रवेश के साथ ही आवास एवं चाबी का डेमो सौंपा गया। प्रभारी मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि गरीबों के पक्के मकान की सपना को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय पूरा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री बनते ही श्री साय ने प्रदेश के 18 लाख लोगों को पक्का मकान की स्वीकृति प्रदान की। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार गांव, गरीब और किसानों के विकास के लिए लगातार काम कर रही है। प्रभारी मंत्री श्री जायसवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर जो भी नियमों के विरूद्ध कार्य करेगा उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने सभी हितग्राहियों से आवास स्वीकृति के नाम पर राशि की मांग करने पर तत्काल इसकी सूचना कलेक्टर, एसपी को देने कहा।

हरियाणा की जीत पर पूरे प्रदेश में भाजपा ने मनाया जश्न

रायपुर (आरएनएस)। हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी की शानदार जीत और लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी पर राजधानी में भाजपा नेताओं ने जबर्दस्त जश्न मनाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। कुशाभाऊ ठाकरे परिसर और एकात्म परिसर स्थित भाजपा कार्यालय में भाजपा नेताओं, पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने पटाखे फोड़कर, ढोल-नगाड़ों की थाप पर नृत्य और जयघोष करके विजय जुलूस निकाला। भाजपा नेताओं ने जम्मू-कश्मीर में भाजपा के बेहतर प्रदर्शन को भाजपा के प्रति बढ़ते जन विश्वास का परिचायक बताया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने हरियाणा के चुनाव नतीजों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि लगातार तीसरी बार हरियाणा की जनता-जनार्दन ने भाजपा के प्रति अपना अगाध विश्वास व्यक्त किया है। एक्जिट पोल को लेकर अति उत्साही कांग्रेसियों को हरियाणा के एक्जेक्ट पोल ने आईना दिखा दिया

चंदा देवी तिवारी हॉस्पिटल की नई यूनिट का शुभारंभ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह के मुख्य आतिथ्य में हुआ सम्पन्न

पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने टटोली स्वास्थ्य मंत्री की नब्ज, कहा- सरकार पूर्णत: स्वस्थ

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय में आज चंदा देवी तिवारी हॉस्पिटल की नई यूनिट का शुभारंभ पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता जिले के प्रभारी एवं प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने की विशिष्ट अतिथि सांसद बृजमोहन अग्रवाल विशेष अतिथि बिलासपुर विधायक अमर अग्रवाल कसडोल विधायक संदीप साहू पूर्व विधायक प्रमोद शर्मा पूर्व कृषक कल्याण आयोग अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा पाठ्य पुस्तक निगम अध्यक्ष शैलेश नितिन त्रिवेदी भाजपा जिला अध्यक्ष सनम जांगड़े नगरपालिका अध्यक्ष चितावर जायसवाल उपस्थित रहे। अतिथियों द्वारा अस्पताल के नए परिसर का उद्घाटन फीता काटकर दीप प्रज्वलन कर किया गया उसके पश्चात संपूर्ण अस्पताल परिसर का दौरा अतिथियों द्वारा किया गया।

अस्पताल के संचालक डॉ. प्रमोद तिवारी डॉ. नितिन तिवारी डॉ. गितिकाशंकर तिवारी एवं पूरे अस्पताल परिवार को बधाई तथा शुभकामनाएं देते हुए विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि बलौदाबाजार के विकास में पं. बंशराज तिवारी परिवार का बहुत बड़ा योगदान है पंडित जी द्वारा विधायक रहते हुए क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान को भुलाया नही जा सकता अपनी पत्नी स्व. चंदा देवी तिवारी के निधन के पश्चात उनकी स्मृति में उनके नाम पर चंदा देवी तिवारी हॉस्पिटल की नींव सन 2000 में रखी गई जिसका संचालन उनके पुत्र डॉ. प्रमोद तिवारी द्वारा किया गया जिसे आगे बढ़ाते हुए उनके पुत्र डॉ. नितिन तिवारी पुत्रवधु डॉ. गितिकाशंकर तिवारी पुत्री डॉ. सुकृति तिवारी एवं पूरी अस्पताल की यूनिट द्वारा उच्च गुडवत्ता युक्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराते हुए आज बलौदाबाजार में राष्ट्रीय स्तर की सेवाएं देने के लिए बाध्य होते हुए बलौदाबाजार में 180 बिस्तरीय अस्पताल सभी सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं जो क्षेत्र के लिए किसी वरदान से कम नही है मैं पूरे तिवारी परिवार समेत अस्पताल यूनिट को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ जैसे ही मुझे गणेश मिश्रा ने इस कार्यक्रम में आने का न्यौता दिया मैं सहर्ष तैयार हो गया। कार्यक्रम में अस्पताल के चिकित्सकों कर्मचारियों के साथ तिवारी परिवार के सदस्यों सहयोगियों मित्रों शुभचिंतकों का पूरा सहयोग रहा। अस्पताल के संचालक डॉ. नितिन तिवारी ने अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अस्पताल के शुभारम्भ कार्य में आये सभी आगंतुकों की हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और विश्वास दिलाता हूं की चंदा देवी तिवारी हॉस्पिटल परिवार बलौदाबाजार में ही हरसंभव इलाज उपलब्ध कराने का प्रयास निरंतर करता रहेगा।

179 महतारी सदन की मिली स्वीकृति, 25 सौ वर्गफुट में बनेगा महतारी सदन

179 महतारी सदन हेतु 52 करोड़ 20 लाख रुपये स्वीकृत

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश के प्रत्येक ग्राम पंचायतों में ग्रामीण महिलाओं को स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने तथा आपसी समरसता स्थापित करने सामायिक कार्यक्रमों में सामूहिक भागीदारी तथा महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के निर्देशानुसार महतारी सदन का निर्माण कार्य किया जाना है। उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के प्रयास से 179 महतारी सदन की स्वीकृति आदेश जारी किया गया है। उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने कहा कि न्यू इंडिया के ग्रोथ साइकल में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की आत्मनिर्भर भारत अभियान महिलाओं की क्षमता को देश के विकास के साथ जोड़ रहा है। प्रदेश के ग्राम पंचायतों में बनने जा रहा महतारी सदन भी इसी दिशा में एक प्रयास है। उन्होंने कहा कि लगातार ग्राम भ्रमण के दौरान महिलाओं द्वारा बैठने की स्थान न होने की शिकायत की और बैठने हेतु स्थान दिलाने की मांग की जाती रही इसलिए महतारी सदन बनाने का विचार आया। ततपश्चात महिलाओं को रोजगार दिलाने और उनको काम काज के लिए स्थान उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश सरकार गांवों में महतारी सदन बनाने जा रही है। 179 महतारी सदन की स्वीकृति इसी उद्देश्य को पूर्ति के लिये जारी किया गया है। कार्यों में एकरूपता के दृष्टिकोण से पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा कार्य का एक मानक डिजाईन एवं प्राक्कलन तैयार किया गया है। प्रति महतारी सदन की लागत राशि रुपये 29.20 लाख होगी। उक्त कार्य महतारी सदन योजना के बजट से 24.70 लाख तथा स्वच्छ भारत मिशन के बजट से 4.50 लाख के अभिसरण से किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

आयुक्त अबिनाश मिश्रा ने रावणभाठा मैदान के समीप रामायण युगीन एवं श्रीकृष्ण लीला पर आधारित सुन्दर कलाकृतियों के आर्ट वर्क का निरीक्षण किया

रायपुर (विश्व परिवार)। आज नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा ने राजधानी शहर के ऐतिहासिक रावणभाठा मैदान के समीप मुख्य मार्ग के किनारे प्रवेष द्वार के दोनो ओर रामायण युगीन और श्री कृष्ण लीला पर आधारित सुन्दर कलाकृतियों के आर्ट वर्क का प्रत्यक्ष अवलोकन निगम अपर आयुक्त श्री विनोद पाण्डेय, जोन 6 जोन कमिश्नर श्री रमेश जायसवाल, कार्यपालन अभियंता श्री अतुल चोपड़ा सहित जोन 6 के संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति में लिया। नगर निगम जोन 6 द्वारा कलाकारों की सहायता से भाठागांव चौक के पास रावणभाठा मैदान के समीप मार्ग के किनारे दीवारों पर प्रवेष द्वार के दोनो ओर सुन्दर कलाकृतियों को उकेर कर आर्ट वर्क करवाया जा रहा है जो लगभग पूर्णता की ओर है। एक ओर श्री कृष्ण लीला आधारित एवं गेट की दूसरी ओर रामायण युगीन ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित सुन्दर कलाकृतियों को कलाकारों ने सुन्दर आर्ट वर्क से दीवारो पर उकेरा है। यह सुन्दर कलाकृतियां मनमोहक रूप में तैयार की गई है। जिससे मार्ग की सुन्दरता निखर रही है। इससे यहां पूर्व में होने वाले अवैध कब्जो पर भी रोक लगी है। इसके माध्यम से नागरिको को रामायण युग एवं श्री कृष्ण लीला की जानकारियां प्राप्त हो सकेंगी।

छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने 9 न्यायिक अधिकारियों के तबादले और नई पोस्टिंग का आदेश जारी

बिलासपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने 9 न्यायिक अधिकारियों के तबादले और नई पोस्टिंग का आदेश जारी किया है। यह आदेश रजिस्ट्रार जनरल बलराम प्रसाद वर्मा के हस्ताक्षर से सोमवार को जारी हुआ। प्रमुख बदलावों में, दंतेवाड़ा फैमिली कोर्ट के जज संतोष कुमार तिवारी को जशपुर का जिला एवं सत्र न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। वहीं, रायपुर में कार्यरत लवकेश प्रताप सिंह बघेल को बिलासपुर के द्वितीय फास्ट ट्रैक (पॉक्सो) कोर्ट का जिला एवं सत्र न्यायाधीश बनाया गया है। कोरबा की जज ज्योति अग्रवाल का तबादला पेंड्रारोड जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में हुआ है, जबकि अच्छेलाल काछी को बिलासपुर से रायपुर भेजा गया है। किरण थवाईत को पेंड्रारोड से रायपुर स्थानांतरित किया गया है। इसके अतिरिक्त, रायपुर की नीरू सिंह को छत्तीसगढ़ राज्य न्यायिक अकादमी में एडिशनल डायरेक्टर नियुक्त किया गया है, और कटघोरा के राहुल शर्मा को डिप्टी डायरेक्टर के पद पर भेजा गया है। वहीं, वर्तमान डिप्टी डायरेक्टर सुमीत कुमार हर्षयाना का तबादला अंबिकापुर किया गया है, और अकादमी के प्रशासनिक अधिकारी लोकेश पाटले को कोरबा भेजा गया है।

राजस्व अभिलेखों के पुराने रिकॉर्डों का होगा डिजिटलाइजेशन

प्रभारी सचिव बनीं भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी की आजीवन सदस्य

- सड़क दुर्घटना रोकने के लिए आवारा मवेशियों के रंगे जाएंगे सींग
- नशा मुक्ति केंद्र में बढ़ेगी बिस्तरों की संख्या, जन-जागरूकता अभियान होगा तेज
- मूलभूत सुविधाओं में समस्या की जानकारी लेने आम नागरिकों से लें फीडबैक
- रायपुर जिले की प्रभारी सचिव श्रीमती निहारिका बारीक ने की विभागीय समीक्षा

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर जिले की प्रभारी सचिव और पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की सचिव श्रीमती निहारिका बारीक ने कलेक्टोरेट परिसर के रेडक्रॉस सभाकक्ष में विभागीय समीक्षा की। इस दौरान प्रभारी सचिव श्रीमती बारीक भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी की आजीवन सदस्य बनीं। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह की उपस्थिति में आयोजित विभागीय समीक्षा में प्रत्येक विभागों के कार्यों की प्रभारी सचिव श्रीमती बारीक ने जानकारी ली और लंबित कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। प्रभारी सचिव श्रीमती बारीक ने कहा कि राजस्व अभिलेखों के पुराने रिकॉर्ड को सुरक्षित किया जाएं। इसके लिए पुराने अभिलेखों को डिजिटलाइजेशन किया जाएं। इससे सभी दस्तावेज हमेशा के लिए सुरक्षित होंगे। सभी सक्षम अधिकारी समय-समय पर राजस्व के लंबित प्रकरणों की मॉनीटरिंग कर उसका निपटारा करें। उन्होंने कहा कि जिले के मुख्य मार्गों में होने वाले सड़क दुर्घटना को रोकने के लिए उचित कदम उठाए जाएं। सड़कों पर बैठे मवेशियों की वजह से होने वाले दुर्घटना को रोकने के लिए पशुधन विभाग को आवारा मवेशियों के सींग में गुणवत्तायुक्त रंग लगाने के निर्देश दिए। इससे वाहनों चालकों को रात के अंधेरे में दूर से ही सड़कों पर बैठे मवेशी आसान से नजर आएं। साथ ही कॉलर बेल्ट भी पहनाया जाएं। मवेशियों के बैठने के लिए चबूतरा बनाया जाएं और गांवों में चौपाल लगाकर मवेशियों को सड़क से हटाने के लिए जागरूक किया जाए। बारिश का पानी कहीं पर भी किसी भी स्थिति में न भरें, इसका विशेष ध्यान रखा जाएं। प्रभारी सचिव श्रीमती बारीक ने कहा कि मूलभूत सुविधाओं में समस्या आने पर आम नागरिकों से फीडबैक लिया जाएं और उनकी समस्याओं को त्वरित निराकृत किया जाएं। समीक्षा बैठक में प्रभारी सचिव श्रीमती बारीक को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री संतोष सिंह ने जिले में नशे की रोकथाम के लिए चलाए जा रहे अभियान के बारे में जानकारी दी। श्री सिंह ने बताया कि गांजा की तस्करी रोकने के लिए पड़ोसी राज्य ओड़िसा के करीब में चेकपोस्ट लगाया गया है, जहां पर वाहनों की समय-समय पर जांच की जाती है, ताकि रायपुर शहर तक मादक पदार्थ न पहुंचे। प्रभारी सचिव श्री बारीक ने कहा कि बच्चों और युवाओं को नशे की लत से दूर किया जाएं। नशा मुक्ति केंद्र में वर्तमान में 15 बिस्तरों की संख्या को बढ़ाई जाएं और वहां युवाओं की काउंसिलिंग बेहतर की जाएं। श्रीमती बारीक ने कहा कि मूलभूत सुविधाओं पेयजल, साफ-सफाई के लिए किसी भी आम नागरिकों को परेशानी न हो और असुविधा होने पर फीडबैक लिया जाए और समस्याओं का त्वरित निराकरण किया जाएं। श्रीमती बारीक ने कहा कि अवैध शराब बेचने वालों पर कार्रवाई की जाएं और शराब दुकानों में शराब की ओव्हररेट बिक्री करने वालों पर भी कार्रवाई की जाएं। इसके अलावा प्रभारी सचिव ने मत्सय पालन, मनरेगा, प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट, पीएम सूर्य योजना, स्वच्छ भारत मिशन, नल-जल योजना, अमृत सरोवर, समाज कल्याण विभाग, आईटीएमएस, प्रधानमंत्री सम्मान निधि, स्कूल शिक्षा विभाग समेत विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा की। समीक्षा बैठक में जिला पंचायत सीईओ विश्वदीप, डीएफओ लोकेश पटेल, सहायक कलेक्टर सुश्री अनुपमा आनंद, अपर कलेक्टर देवेंद्र पटेल समेत सभी जिला स्तरीय अधिकारी समेत अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

एम्स रायपुर की डॉ. माधवी मडके ने जयपुर में राष्ट्रीय स्तर की गायन प्रतियोगिता जीती

रायपुर (विश्व परिवार)। एम्स रायपुर की सूक्ष्मजीवविज्ञान की सहायक प्रोफेसर, डॉ. माधवी मडके ने वॉयस ऑफ डॉक्टर्स (वीओडी) सीजन 2 में डुएट सिंगिंग प्रतियोगिता जीतकर एक शानदार उपलब्धि हासिल की है, जो डॉक्टरों के लिए आयोजित एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय स्तर की गायन प्रतियोगिता है।

7, 000 डॉक्टरों में से, जो पूरे भारत से इस प्रतियोगिता में भाग ले रहे थे, डॉ. मडके डुएट श्रेणी में सबसे अलग रहीं। प्रारंभिक ऑनलाइन राउंड में, उन्होंने छत्तीसगढ़ से सोलो गायन में प्रथम उपविजेता का स्थान प्राप्त किया।

फाइनल राउंड 27 से 29 सितंबर 2024 के बीच जयपुर, राजस्थान में लाइव आयोजित किए गए, जहाँ डॉ. मडके ने अपने डुएट पार्टनर, डॉ. महेश चौधरी (मुंबई, महाराष्ट्र) के साथ मिलकर डुएट श्रेणी में जीत हासिल की।

संगीत के प्रति गहरी लगाव रखने वाली डॉ. मडके ने हमेशा अपने पेशेवर और कलात्मक प्रयासों के बीच एक संतुलन बनाए रखा है। उन्होंने पहले भी अपनी संगीत प्रतिभा के लिए कई पुरस्कार जीते हैं और अपने माता-पिता, पति, बच्चों और सहकर्मियों का निरंतर समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया है। एम्स रायपुर न केवल मरीजों की देखभाल और अकादमिक क्षेत्र में बल्कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भी लगातार चमक बिखेर रहा है।

राष्ट्रीय एवं प्रथम विश्व गाइड जम्बूरी की तैयारी को लेकर बृजमोहन की अध्यक्षता में हुई पहली बैठक

भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, छत्तीसगढ़ की राज्य परिषद की बैठक

रायपुर (विश्व परिवार)। मंगलवार को भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, छत्तीसगढ़ की राज्य परिषद की बैठक अध्यक्ष श्री बृजमोहन अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में 2025 में प्रस्तावित 19वीं राष्ट्रीय जम्बूरी एवं प्रथम विश्व गाइड जम्बूरी की तैयारी को लेकर चर्चा की गई।

रायपुर स्थित राज्य मुख्यालय में आयोजित राज्य परिषद की बैठक को संबोधित करते हुए अध्यक्ष एवं सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, राष्ट्रीय मुख्यालय द्वारा छत्तीसगढ़ को बड़ी और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। छत्तीसगढ़ के लिए यह सौभाग्य का विषय है। श्री अग्रवाल ने कहा कि 19वीं राष्ट्रीय जम्बूरी एवं प्रथम विश्व गाइड जम्बूरी की मेजबानी का एक अच्छा अवसर मिला है। यह कार्य चुनौतिपूर्ण भी होगा। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के राज्य अध्यक्ष ने प्रस्तावित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के आयोजन की तैयारी को लेकर चर्चा की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार और राष्ट्रीय मुख्यालय से समन्वय स्थापित करते हुए

दोनों आयोजन को लेकर किस तरह की व्यवस्थाएं करनी हैं, क्या-क्या संसाधन जुटाने हैं, इसे सूचीबद्ध करते हुए तैयारी की जाए। वित्तीय संसाधन को लेकर भी चर्चा की गई। श्री अग्रवाल ने जिलों में स्काउट गाइड की सक्रियता बढ़ाने का निर्देश दिया और ऊर्जावान एवं क्रियाशील टीम तैयार करने कहा। राज्य परिषद द्वारा राष्ट्रीय जम्बूरी एवं प्रथम विश्व गाइड जम्बूरी के आयोजन की मेजबानी के लिए सहमति देने हेतु मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक में इसकी जानकारी दी गई कि भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, राष्ट्रीय मुख्यालय की नियम पुस्तिका अनुसार राज्य अध्यक्ष के पद पर नियुक्त व्यक्ति परिषद के कार्यकाल तक यथावत रहेंगे। बैठक में स्कूल शिक्षा मंत्री को पदेन संरक्षक मनोनित किए जाने एवं उप नियम में संशोधिन करने का प्रस्ताव लाया गया। इसके पूर्व बैठक को कार्यकारी अध्यक्ष श्री राजेश अग्रवाल द्वारा भी संबोधित किया गया। स्वागत उद्बोधन राज्य मुख्य आयुक्त डा. सोमनाथ यादव ने दिया तथा क्रियाकलापों सहित जम्बूरी की प्रारंभिक तैयारी संबंधी जानकारी दी। बैठक का संचालन राज्य सचिव कैलाश सोनी ने किया।

सौ बरस का विशाल आम का पेड़ काटा गया, लोगों की आँखों में आये आंसू

सरकारी अंतर्गत कार्य होने के कारण लोग विरोध नहीं कर पाएं, पेड़ काटने कों लेकर लोंगो में नाराजगी

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। प्रदेश में शासन द्वारा एक पेड़ माँ के नाम अभियान चलाकर पर्यावरण में हरियाली का संदेश दिया जा रहा तों वहीं दूसरी और विकास के नाम पर पेड़ काटे जा रहें. जिला मुख्यालय के बी. ई.ओ ऑफिस के नजदीक धोबी पारा भागलपुर रोड में सरकारी आवासीय परिसर में एक विशाल पुराना आम का पेड़ काट दिया गया.जिससे लोगों में भारी नाराजगी हैं.जैसे ही पेड़ गिरने कि आवाज आई तों सड़क पर भीड़ लग गई. लोगों ने पेड़ कटाई कों लेकर न सिर्फ अपसोस जताया बल्कि पेड़ काटने कि कड़ी निंदा कि मुहल्ले के लोंगो ने बताया कि सरकारी जमीन में पेड़ होने और शासकीय अंतर्गत काम होने के कारण इसका लोग विरोध नहीं कर पाएं. पेड़ कटने के बाद लोगों के आंख में आंसू आ गए. अगल-बगल के लोंगो ने बताया कि पेड़ भावना से जुड़ी थीं जो यादगार रहेंगा . बचपन इसी आम पेड़ के छाव में बीता यहीं के मीठे आम के फल खाएं .गर्मी के दिनों में जब पेड़ो कि ठंडी हवा चलती थीं तों बहुत सुकून मिलता था. अभी सरकारी जमीन पर और भी विशाल सौ बरस से अधिक उम्र के पेड़ हैं जो भी शायद विकास के नाम पर कट जाएंगे.

बताया जा रहा कि उपरोक्त जमीन में ठेकेदार द्वारा नई शासकीय आवास या दफ्तर बनाया जाएगा. पेड़ शासकीय जमीन में निर्माण कार्य अचड़चन करेगी .सरकारी जमीन भी सिमित है जहां आवासीय बिल्डिंग बननी हैं इसलिए पेड़ काट दी गई.लोगों ने कहा ऐसा करना चाहिए जिससे बिल्डिंग भी बन जाए.और पेड़ भी न कटे.

पेड़ो के काटव से मौसम परिवर्तन हो रहा : ज्ञात हो कि जशपुर वन अच्छानदित क्षेत्र हैं यहां काफी पेड़ पौधे हैं इसलिए ऊपर घाट में हमेशा ठंड रहती हैं. गर्मी में यहां कम गर्मी और ठंड में यहां अच्छी ठंडी पडती हैं लेकिन विकास के नाम पर अत्यधिक पेड़ो कि कटाई से मौसम परिवर्तन हो रहा हैं. पेड़ो के अत्यधिक काटव से अब तों पहले जैसे मौसम भी नहीं रहा. जहां कभी पंखे तक कि जरूरत नहीं पडती थीं लेकिन गर्मी में अब तों पंखे कूलर भी फेल हो रहें. एक दौर विकास के नाम पर सैकड़ो पेड़ कटे जिसका खामयाजा आज भी झेल रहें.अब जो बचें खुचे पेड़ हैं वह भी विकास के नाम पर उनकी भी बलि चढ़ रहीं. पेड़ कों देखकर अंदाजा लगाया जा रहा कि इसकी उम्र करीबन 100 से अधिक थीं.हर साल विकास के नाम पर सैकड़ो पेड़ो कि बलि दी जाती हैं. जबकि उसकी तुलना में उतने पेड़ नहीं लगाएं जाते.

पेड़ो के कटाई से पर्यावरण कों नुकसान : पर्यावरण प्रेमी व कवि हरिनाथ दास मानिकपुरी और पारंस नाथ जायसवाल ने पेड़ कटने कों लेकर गहरा दुख व्यक्त किया हैं.उन्होंने कहा एक पेड़ कटाने के बदले सौ पेड़ लगाएं और उनकी हिफाजत करें.निर्माण कार्य में पेड़ का काटव जिले में दिनों दिन बढ़ रहें हैं.जिसे बहुत हल्के में लिया जा रहा.लेकिन पेड़ो के काटव कों जरूरत पर नहीं रोका जा सकता पर जगरूकता लाकर पेड़ लगाकर उसकी जिम्मेदारी लेकर भरपाई की जा सकता हैं.

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा टाटीबंध कालोनी, रायपुर में निर्मित एल.आई.जी. योजना में से भवन/भूखण्ड क्र. **एल.आई.जी.-175, श्री प्रेमानंद सोनपुरी पिता स्व. श्री कामता प्रसाद सोनपुरी** को आवंटित / नामांतरित किया गया है। मूल आबंटी / नामांतरी द्वारा दिनांक 03.07.2001 को विक्रय विलेख निष्पादित करा लिया गया है।

मूल आबंटी/नामांतरी की मृत्यु दिनांक 11.04.2014 को हो जाने के कारण **1. श्रीमती निर्मला सोनपुरी पति स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पत्नि) 2. श्री तुषार कांत सोनपुरी पिता स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पुत्र) 3. श्रीमती सीता सोनी पिता स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पुत्री) 4. सुश्री नुपूर सोनी पिता स्व. जोगेन्द्र सोनी (नातिन) 5. सुश्री आयुषी सोनी पिता स्व. जोगेन्द्र सोनी (नातिन) 6. श्रीमती रीता सोनी पिता स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पुत्री)** के द्वारा उक्त भवन / भूखण्ड अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन / भूखण्ड **1. श्रीमती निर्मला सोनपुरी पति स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पत्नि) 2. श्री तुषार कांत सोनपुरी पिता स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पुत्र) 3. श्रीमती सीता सोनी पिता स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पुत्री) 4. सुश्री नुपूर सोनी पिता स्व. जोगेन्द्र सोनी (नातिन) 5. सुश्री आयुषी सोनी पिता स्व. जोगेन्द्र सोनी (नातिन) 6. श्रीमती रीता सोनी पिता स्व. श्री प्रेमानंद सोनपुरी (पुत्री)** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय / वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के नामांतरण के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर स्वत: उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जायेंगी, एवं भवन का नामांतरण आदेश जारी कर दिया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना, नवा रायपुर
प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27, नवा रायपुर, अटल नगर (छ.ग.)
फोन नं.-0771-4016094 E-mail ID:- em_zone2@yahoo.com

// आम सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि निम्नालिखित हितग्राहियों को लीज में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा आबंटित है, उक्त स्वतंत्र भवन को फ्री-होल्ड के लिए निर्धारित प्रारुप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है, जिनका फ्री-होल्ड संपरिवर्तन किया जाना है। अत: आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के अंदर कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज के साथ अधोहस्ताक्षकर्ता के कार्यालय में कार्यालीन दिवस में प्रस्तुत करें। निधारिति अवधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही होगी।

क्र	आबंटी का नाम	पिता/पति का नाम	भवन क्रमांक	योजना का नाम
1.	श्रीमती दुर्गा बाई साहू	श्री सालिक राम साहू	भवन क्र. 93	अटल आवास योजना
2.	श्रीमती किरण यादव	श्री गौरी शंकर यादव	भवन क्र. 216	अटल आवास योजना
3.	श्री राम गोपाल तिवारी	स्व. श्री खेदूप्रसाद तिवारी	एल.आई.जी.123	अटल आवास योजना
4.	श्रीमती नेहा साहू	श्री दीपक कुमार साहू	एल.आई.जी. 27	अटल आवास योजना
5.	श्रीमती नेहा साहू	स्व. श्री राकेश कुमार साहू	एल.आई.जी. 111	अटल आवास योजना
6.	श्रीमती विजयलक्ष्मी साहू	श्री लोकेश कुमार साहू	एल.आई.जी. 75	दीनदयाल आवास योजना
7.	श्रीमती शकीना बानो	श्री मोहम्मद सलीम चौहान	एल.आई.जी. 208	दीनदयालआवास योजना

संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर, जिला-रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा, सामान्य आवास **योजनातंर्गत कचना, रायपुर में स्थित ई. डब्ल्यू, एस फ्लैट क्र.-126, ब्लॉक नं-11, (प्रथम-तल)** को इस कार्यालय के नामांतरण आदेश क्रमांक 113 दिनांक 06.04.2015 के द्वारा **श्री रविकांत तिवारी पिता स्व. श्री रामानुज तिवारी,** के नाम पर नामांतरित किया गया है।

वर्तमान में नामांतरी **श्री रविकांत तिवारी पिता स्व. श्री रामानुज तिवारी, निवासी:- श्यामाचरण शुक्ल निवास, शिव मंदिर के पास, खम्हारडीह जिला-रायपुर,** के द्वारा उक्त फ्लैट को क्रेता **श्री राकेश सेन पिता श्री हरीराम सेन, निवासी: एम.आई. जी-49, कचना रोड़ हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, ऐश्वर्या किंग्डम पत्रकार, कॉलोनी रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना विक्रय इकरारनामा, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज के साथ आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय करने के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./14929/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 07-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14929
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227E00159** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MD. ISRAFIL ANSARI** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O MD. RAZA MIYA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1 मोहम्मद सुहेल अहमद 2 मोहम्मद असलम अंसारी** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - स्व. मोहम्मद ईसराफिल अंसरी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15039/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 08-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15039
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802J00544** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHASHANK DWIVEDI S/O INDRAMANI, SHWATI DWIVEDI W/O SHASHANK** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHASHANK DWIVEDI S/O INDRAMANI, SWATI DWIVEDI W/O SHASHANK** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **TANU SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ASHANK KUMAR SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15057/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 08-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15057
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801S0155A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DEVENDRA KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANTRAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **KRISHNA KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANTRAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./14910/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 07-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14910
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227R00584** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHYAMJI BHAI PATEL** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LATE. BHIMJI BHAI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1 श्री ईश्वर पटेल, 2. श्री हरसुख पटेल** पिता/पति श्री/श्रीमती **दोनों के पिता - स्व. श्यामजी भाई पटेल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./14986/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 07-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14986
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227R00515** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **LAKKHI PRASAD AGRAWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LATE BALDEV PARDESH AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती रश्मि अग्रवाल पति श्री सुनील कुमार अग्रवाल** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - श्री लक्खी प्रसाद अग्रवाल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दान पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./14987/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 07-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14987
वार्ड का नाम-12- महात्मा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR225A00416** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DAULATRAM** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O AASKARAN NAHAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री प्रफुल्ल नाहर** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - स्व. श्री दौलत राम नाहर** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा टाटीबंध कॉलोनी रायपुर में ढांचा भवन योजना के अंतर्गत **भवनों/भूखण्ड क्रमांक CH - 492 श्री नितेश सिंह पति श्री उमाशंकर सिंह को भाड़ाक्रय/पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक 28/4/16** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के दान इकरारनामा हेतु दिनांक 30.09.2024 का निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **ब्रिजेश कुमार सिंह पिता / उमाशंकर सिंह** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय विक्रय अनुमति की मांग की है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय/वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अंदर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर बुधवार 09 अक्टूबर 2024

भटगांव खदान बंद हो जाने की आशंका पर पांचो यूनियन ने महाप्रबंधक कार्यालय का किया घेराव

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) –भटगांव खदान का सीटीओ नहीं मिलने से श्रमिक नेताओं ने महाप्रबंधक कार्यालय का घेराव किया
भटगांव खदान को आगे चलाने हेतु सी.टी.ओ नहीं मिलने से आक्रोशित श्रमिक नेताओं और श्रमिकों ने आज महाप्रबंधक कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन कियाऔर ज्ञापन सौंपा। ज्ञात हो की केंद्र सरकार द्वारा सी.टी.ओ नहीं मिलने की वजह से एसईसीएल भटगांव क्षेत्र अंतर्गत संचालित 1–2 भूमिगत कोयला खदान 31 अक्टूबर को बंद होने जा रहा है। जिससे श्रमिकों ने भारी आक्रोश है। इसी बात को लेकर के आज पांचों ट्रेड यूनियन के श्रमिक नेताओं ने संयुक्त मोर्चा बना करके कोयला मजदूरों के साथ भटगांव खदान प्रबंधक कार्यालय तथा महाप्रबंधक कार्यालय जरही का घेराव करके प्रदर्शन किया तथा सी एम डी बिलासपुर के नाम ज्ञापन सौंपा।

श्रमिक नेताओं ने आरोप लगाया की प्रबंधन के द्वारा लगातार बताया जा रहा था सी. टी.ओ. लेने का प्रयास किया जा रहा है परंतु उच्च प्रबंधन के सूत्रों ने मजदूर नेताओं को बताया कि शायद 31 अक्टूबर तक सी. टी.ओ मिलना पॉसिबल नहीं है और खदान बंद करना पड़ेगा इस जानकारी के बाद मजदूरों में भारी आक्रोश फैल गया। भटगांव भूमिगत खदान में कार्यरत करीब 1000 मजदूरों मे अन्यत्र क्षेत्र मे स्थानांतरण होने का भय सताने लगा है।जिससे छुब्ध होकर श्रमिक संगठन एटक, बी एम एस, इंटक, एच एम एस, सीटू के नेताओं ने संयुक्त मोर्चा बनाकर के आज सुबह भटगांव भूमिगत खदान प्रबंधक कार्यालय का घेराव मजदूरों के साथ किया। वही सैकड़ो मजदूरों के साथ शाम 4 बजे महाप्रबंधक कार्यालय जरही के समक्ष धरना प्रदर्शन करके घेराव किया। प्रदर्शन के दौरान भाषण देते हुवे श्रमिक नेता मनोज पांडे,रविंद्र सिंह, संजय सिंह,अजय शर्मा, सूरजन प्रजापति, सतीश तिवारी ने कहा की खदान संचालन और अनुमति से संबंधित कागजी कार्रवाई करने तथा सी टी ओ,फ सी,ई सी प्राप्त करना प्रबंधन का काम है। जिसके लिए उनके द्वारा सार्थक प्रयास नहीं किया गया और आज प्रबंधन की लापरवाही का खामियाजा 1000 मजदूरों को चुकाना पड़ रहा है और सभी के ऊपर स्थानांतरण का खतरा मंडरा रहा है जिसके लिए स्थानीय प्रबंधन जिम्मेदार है। इस दौरान प्रबंधन के खिलाफ श्रमिक नेताओं और श्रमिकों ने जमकर नारेबाजी की और नारा लगाया कि काम खाख का तनख्वाह लाख का लेने वाले अधिकारी होश मे आओ।

श्रमिक नेता मनोज पांडे ने बताया कि इसी मांग को लेकर के भटगांव श्रमिक संगठन के नेताओं तथा श्रमिकों के द्वारा 15 अक्टूबर को सी एम डी ऑफिस बिलासपुर का घेराव किया जाएगा। जरूरत पड़ी तो मजदूर हितों की रक्षा के लिए चक्का जाम भी किया जाएगा। इस प्रदर्शन और घेराव अवसर पर इंटक के संजय सिंह,अमोद सिंह, बीएमसी के संजय सिंह, सूरजन प्रजापति, दिलीप मंडल, एटक के मनोज पांडे, अखलाक खान,हरीश बड़ा, हरेंद्र सिंह एचएमएस के श्रमिक नेता सतीश तिवारी, विष्णु साहू सीटू के श्रमिक नेता अजय शर्मा,सुनील विश्वकर्मा सहित सैकड़ो की संख्या में कोयला मजदूर सक्रिय रहे।

बिरहोर जनजाति के युवा और युवतियों को अतिथि शिक्षक की मिली नौकरी

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर अजीत वसंत ने डीएमएफ मद से शिक्षकों की कमी दूर करने और लुप्त हो रही पहाड़ी कोरवा जनजाति के शिक्षित पहाड़ी कोरवाओं को शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में नौकरी देकर उनका आर्थिक उत्थान करने के लिए खास पहल की है। कलेक्टर के विशेष प्रयासों से विशेष संरक्षित जनजाति पहाड़ी कोरवा, बिरहोर जनजाति के युवा और युवतियों को विद्यालयों में अतिथि शिक्षक, भृत्य आदि की नौकरी प्रदान की गई है। समारोह पूर्वक कार्यक्रम में नियुक्ति पत्र छत्तीसगढ़ के श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन, कटघोरा विधायक प्रेमचंद पटेल, महापौर राजकिशोर प्रसाद की उपस्थिति में प्रदान किया गया। श्रम मंत्री की पहल पर इन्हें 10 से 12 हजार रुपये मानदेय सुनिश्चित किया गया है। इनकी नियुक्ति 1 जुलाई 2024 में की गई है और नियुक्ति प्रदान करने के साथ-साथ कलेक्टर द्वारा बार-बार बैठकें लेकर निर्देशित किया जाता रहा है कि डीएमएफ से इन्हें नियमित तौर पर मानदेय मिलता रहे। जिला खनिज संस्थान न्यास के द्वारा इनका मानदेय भुगतान संबंधित विभाग के माध्यम से किया जाना है। अब विडम्बना है कि विगत 3 महीने से अतिथि शिक्षकों को मानदेय अप्राप्त है। भृत्यों को भी 3 माह से मानदेय नहीं मिला है। इस संबंध में अतिथि शिक्षक बने पहाड़ी कोरवाओं से जानकारी लेने पर बताया कि 1 जुलाई 2024 को उनकी नियुक्ति हुई है और आज दिनांक 6 अक्टूबर 2024 तक किसी को मानदेय के नाम पर 1 रुपये भी नहीं मिला है। पहाड़ी कोरवा समाज के अध्यक्ष फितराम पहाड़ी कोरवा के द्वारा इस संबंध में जिला मुख्यालय पहुंचकर जनदर्शन में बात रखी जा चुकी है। अतिथि शिक्षकों ने बताया कि उन्हें 4 अक्टूबर तक भुगतान प्राप्त हो जाने की बात कही गई थी लेकिन अभी तक वे मानदेय का रास्ता देख रहे हैं। इन्होंने बताया कि शुरू में हर महीना मानदेय मिलेगा,बोला गया था फिर बाद में कुछ लोगों से मालूम चला कि नौकरी मिलने पर शुरू-शुरू में 3 महीने तक पैसा नहीं मिलता, बाद में आता है।

अग्नि सुरक्षा नियमों का कड़ाई से कराएं पालन
अधिवक्ता धनेश ने आयुक्त को लिखा पत्र

कोरबा(विश्व परिवार)। अधिवक्ता धनेश सिंह ने शहर के व्यवसायियों को अग्नि सुरक्षा संबंधी नियमों का कड़ाई से पालन कराए जाने की मांग की है। निगमायुक्त कोरबा को लिखे पत्र में श्री सिंह ने कहा है कि अभी नगर में नवरात्रि चल रही है इसके बाद दीपावली का त्योहार है। जिसके कारण शहर की सडकों एवं दुकानों में भारी भीड़ उमड़ रही है। नगर के अधिकांश व्यवसायी अपने संस्थान में अग्नि सुरक्षा नियमों का पालन नहीं करते हैं न ही अग्निशमन उपकरण रखते हैं, यदि कहीं मिल भी जाए तो उसका उचित रखरखाव नहीं करते जिसके कारण व्यवसायी स्वयं ही अपने जान-माल को खतरे में डालते ही हैं साथ-साथ संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों एवं आगंतुक ग्राहकों के जीवन को भी संकट में डालते हैं। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2023 के जून माह में टीपी नगर स्थित व्यवसायिक काम्पलेक्स में साहेब नामक शो रूम में भीषण अग्निकांड हुआ था जिससे आधा दर्जन दुकान खाक हो गए। एक महिला को अपना जीवन गंवाना पड़ एवं कई लोग घायल भी हुए। इसी तरह विगत जुलाई माह में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कोरबा के ठीक सामने स्थित डिलाइट क्लाथ में भी भीषण अग्निकांड हुआ जिसमें लाखों का सामान जलकर राख हो गया। अतरू जरूरी है कि त्योहारी समय को देखते हुए एवं पूर्व घटित घटनाओं को दृष्टिगत नगर के व्यवसायियों को अग्नि सुरक्षा संबंधी नियमों का पालन कराए जाने हेतु त्वरित कार्यवाही की जाए।

नेता प्रतिपक्ष डॉ महंत ने सियान सदन में वरिष्ठ जनों से मुलाकात की

कोरबा(विश्व परिवार)। नेता प्रतिपक्ष डॉ चरण दास महंत कल कोरबा प्रवास पर रहे और शाम करीब पांच बजे पुरानी बस्ती निवासी व दिवंगत वरिष्ठ कांग्रेसी इशहाक रिजवी (बाबा खान) के निवास में पहुंच कर शोकाकुल परिवार से भेट कर शोक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने बताया की रिजवी परिवार से खास कर बाबा भाई से जब वे चांपा में थे तब से संबध रहा है बाबा भाई कांग्रेस के सच्चे वरिष्ठ कार्यकर्ता थे बता दे की डॉ महंत का काफिला चित्रा टाकीज के सामने स्थित निगम द्वारा निर्मित सियान सदन में भी रुका और वहां वरिष्ठ जनों से मुलाकात की जो वहां कैरम खेल रहे थे। डॉ महंत ने भी उनके साथ कैरम खेलने की इच्छा जाहिर करते हुए कैरम का लुफ्त उठाया और बचपन के दिनों को याद किया। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता मूरित राम साहू, धरम निर्मले,सुरेश सहगल, हरीश परसाई,श्याम सुन्दर सोनी, सुनील जैन,समिति के अध्यक्ष विमल थवाईत,सचिव बोध सिंह,उपाध्यक्ष टिकेश्व सिंह, यहसान खान,खगेश्वर सिंह,बजरंग सोनी,रियाज अली, प्रदीप जायसवाल सहित काफी लोग उपस्थित थे।

दो बाइको में टक्कर : दो की मौत, तीन घायल, तीन सवारी के साथ बाइक चला रहे थे रांग साइड

कोरबा(विश्व परिवार)। देर रात डुमरकछार और माखनपुर के बीच कोसाबाड़ी के पास दो बाइको में टक्कर हो गई। दुर्घटना इतनी जबरदस्त थी की स्थल पर ही दो लोगों मौत हो गई। जबकि तीन अन्य घायल हो गए। जिन्हें गंभीर हालत में उपचार के लिए बिलासपुर के अस्पताल में दाखिल किया गया है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार ग्राम डुमरकछार निवासी राजू सिंह मरकाम अपने दो अन्य मित्र के साथ बाइक में सवार होकर रांग साइड (गलत तरफ) से माखनपुर की ओर जा रहा था, तभी कटघोरा की ओर से बाइक में बिलासपुर जा रहे डबरीपारा सिम्स के पीछे बिलासपुर निवासी दिनेश कुमार यादव 35 वर्ष व साथी संतोष यादव के साथ उनकी टक्कर हो गई। घटना में दिनेश कुमार यादव की स्थल पर ही मौत हो गई। हालांकि दुर्घटना के बाद स्थल पर राहगीरों की भीड़ लग गई। राहगीरों ने सभी घायलों को उपचार के लिए पाली स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा। जहां डाक्टरों ने राजू सिंह मरकाम को परीक्षण के बाद मृत घोषित कर दिया। शेष तीन लोगों की स्थिति गंभीर देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद बिलासपुर रेफर कर दिया गया, जहां उनका इलाज किया जा रहा है। घटना की सूचना मिलते ही पाली पुलिस स्थल पर पहुंची और वैधानिक कार्रवाई कर शव को पोस्टमार्टम करा अंतिम संस्कार के लिए स्वजनों को सौंप दिया। पुलिस ने बताया कि दिनेश कुमार कोरबा एक कार को छोड़ने गया था और वाहन छोड़ कर अपने मित्र संतोष के साथ वापस बिलासपुर लौट रहा था, तभी यह घटना हो गई। राजू सिंह मरकाम की सड़क दुर्घटना में मौत के बाद स्वजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और पूरे गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है। राजू अपने घर का कमाऊ सदस्य था। राष्ट्रीय राजमार्ग में दुर्घटना कम होने का नाम नहीं ले रही है। शनिवार की रात हुई घटना में दो लोगों की जान चली गई। तेज रफ्तार व गलत साइड गाड़ी चलाने की वजह से घटना हुई। दुर्घटना की मुख्य वजह ज्यादा रफ्तार से गाड़ी चलाना, लापरवाही से वाहन चलाना, नियमों का उल्लंघन करना, संकेतों को न समझ पाना, थकान, शराब पीकर गाड़ी चलाना, नशीली दवाओं के प्रभाव में गाड़ी चलाना प्रमुख है।

सम्पूर्णता अभियान के समापन पर कार्यक्रम का आयोजन

कोरबा(विश्व परिवार)। आकांक्षी विकासखंड कोरबा एवं पोड़ी-उपरोड़ा में नीति आयोग द्वारा संचालित कार्यक्रम सम्पूर्णता अभियान का समापन उत्सव आयोजन किया गया। समारोह में विभागों के द्वारा कार्य योजना बताई गयी कि विभाग के द्वारा थीम के 06 इंडिकेटर्स को पूर्ण किए जाने हेतु फील्ड में विभिन्न कार्य किए गए हैं। उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग, आईसीडीएस एवं एग्रीकल्चर, पशु चिकित्सा विभाग जनप्रतिनिधि, जनपद सदस्य, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत कोरबा इंदिरा भगत, सीईओ पोड़ी-उपरोड़ा खगेश निर्मलकर, अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी महेश्वरी साव, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी सहायिका, एनआरएलएम कैडर, ब्लॉक के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे। जनपद पंचायत पोड़ी-उपरोड़ा में संपूर्णता अभियान के समापन समारोह का शुभारंभ जनपद सदस्य श्रीमती किरण मरकाम ने किया। क्लस्टर दीदी सुकमनिया द्वारा स्वागत गीत का गायन किया गया। जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने आकांक्षी विकासखंड के महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थित स्वास्थ्य विभाग से बीएमओ, महिला बाल विकास विभाग से सीडीपीओ कृषि विभाग, केवीके एवं पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा अपने अपने विभागों के द्वारा थीम के 6 इंडिकेटर्स को पूर्ण किए जाने हेतु फील्ड में किए गए विभिन्न कार्यों के विषय मे बताया गया।कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिओ एवं अधिकारिओं द्वारा विभिन्न विभागों से लगाई गयी प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। महिला और बाल विकास विभाग द्वारा पोषण आहार कार्यक्रम एवं कृषि विभाग की प्रदर्शनी व सॉइल कार्ड, हस्ताक्षर अभियान, सेल्फी कैपेन एवं ग्रुप फोटो में प्रतिभाग किया गया। क्लस्टर और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के द्वारा रंगोली, गीत गाया गया। महिला और बाल विकास विभाग द्वारा पोषण वाटिका लगा कर पोषण आहार संबंधी जानकारी दी गई।

अवैध रूप से 25 लीटर कच्ची महुआ शराब रखकर परिवहन करने वाला आरोपी गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक कोरबा श्री राजेश कुकरेजा (भा.पु.से.) के निर्देशन एवं अति. पुलिस अधीक्षक कोरबा श्रीमति नेहा वर्मा (रा.पु.से), नगर पुलिस अधीक्षक कोरबा श्री भूषण एक्का (रा.पु.से.) के मार्गदर्शन पर लगातार जुआ, सट्टा, आबकारी एवं नारकोटिक्स एक्ट की कार्यवाही हेतु निर्देश प्राप्त होने पर निरीक्षक युवराज तिवारी थाना प्रभारी थाना उरगा के नेतृत्व में लगातार पेट्रोलिंग कर कार्यवाही की जा रही है। इसी तारतम्य में 06.10.2024 को मुखबीर से सूचना मिला कि एक व्यक्ति मोटर सायकल से भारी मात्रा में अवैध महुआ शराब लेकर जा रहा है मुखबीर सूचना पर रेड कार्यवाही किये जो चीतापाली पुलिया के पास एक व्यक्ति मोटर सायकल में आते दिखा जिसे रूकवाकर पूछताछ किया जो अपना नाम ज्ञान लाल चैहान पिता जीरात राम चैहान उम्र 38 वर्ष सा0 कोहडिया चारपारा सीएसईबी थाना सिविल लाईन का रहने वाला बताया। जिसके कब्जे से सफेद रंग के प्लास्टिक पन्नी में करीब 25 लीटर कच्ची महुआ शराब किमती-2500 रूपये व मोटर सायकल होण्डा एक्स ब्लेड मिला जिसे गवाहों के समक्ष जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया।

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस पर सभी तैयारियां हो सुनिश्चित-कलेक्टर

सूरजपुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया जाना है, जिसका सफल सम्पादन हो इसके लिए समय सीमा की बैठक में कलेक्टर श्री रोहित व्यास द्वारा उपस्थित अधिकारियों को विभिन्न दायित्व सौंपें गये। उन्होंने स्पष्ट किया कि छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस पर होने वाला कार्यक्रम उत्कृष्ट स्तर का हो। कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न विभागों की विभागीय प्रदर्शनी में उपलब्धि, महत्वपूर्ण योजना एवं सफल परियोजना को विशेष रूप से प्रदर्शित करने हेतु कलेक्टर ने संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसके साथ ही 01 नवम्बर से 06 नवम्बर तक जिला मुख्यालय के समस्त शासकीय भवनों में रोशनी सुनिश्चित करने की बात कही गई। बैठक में ग्रामीण सचिवालय को लेकर भी विस्तृत चर्चा की गई। जिसमें तय ड्यूटी चार्ट के अनुरूप सभी अधिकारी अपने कर्तव्य का वाहन करें और अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करे, इसके लिए आवश्यक दिशा निर्देश कलेक्टर द्वारा किये गये। पंडों जनजाति के लिये लगाये जा रहे विशेष शिविर को लेकर भी चर्चा की गई। पंडों जनजाति के हितग्राहियों को शत-प्रतिशत शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाये, इसके लिये शिविर में सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों को नियमित रूप से उपस्थित होने की बात कही गई।

छत्तीसगढ़ी वेशभूषा के साथ किया गरबा

कोरबा(विश्व परिवार)। आश्विन नवरात्र पर्व के आज पांच दिन पूरे हो रहे हैं। पर्व को लेकर नगर से लेकर जिले भर में उत्सवी वातावरण है। उत्तर के परंपरा के हिसाब से अधिकांश पंडालों में नवरात्र के प्रथम दिन घट स्थापना के साथ प्रतिमाएं स्थापित की गई। यहां पूजा अर्चना का सिलसिला जारी है। उत्सव को विशेष बनाने में दुर्गा पूजा मंडपों को अलग-अलग स्वरूप दिया गया है। रात्रि में इनकी रौनक देखते बनती है। शारदा विहार आवासीय परिसर में रात्रि 9 बजे गरबा का क्रम शुरू होता है। लगभग डेढ़ घंटे तक चलता है। गत रात्रि छत्तीसगढ़ी वेशभूषा में बालिकाओं और महिलाओं ने गरबा प्रस्तुति की। पारंपरिक गीतों के साथ-साथ स्थानीय भाषा को यहां प्राथमिकता दी गई। छत्तीसगढिया वस्त्रों के साथ अब विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे प्रयोग नवरात्र पर हो रहे हैं। दर्शनार्थियों ने इस नजारे को देखा और आनंद लिया।

धर्म और विनम्रता को आत्मसात करें जीवन में-आचार्य दीवान

कोरबा(विश्व परिवार)। आचार्य श्रीधर दीवान ने श्रद्धालुओं को बताया कि जीवन में धर्म और विनम्रता आवश्यक है। इस आत्मसात करने की आवश्यकता है। राजा नहुष ने देवराज इंद्र का स्थान लेने के साथ उसकी पत्नी पर अधिकार जमाने की कोशिश की। इसके नतीजन उसे सर्प योनी का श्राप मिला। इससे अहंकार का अंत हुआ। नवरात्र पर प्रगतिनगर में श्रीमद् देवी भागवत के आयोजन में दीवान ने यह बात कही। 26वें वर्ष में यहां दुर्गा पूजा हो रही है जिसमें देवी भागवत को शामिल किया गया है। भागवताचार्य ने आदिशक्ति से संबंधित प्रसंगों पर यहां रोशनी डालते हुए श्रद्धालुओं को बताने का प्रयास किया कि सत्कर्मों का अपना प्रभाव होता है और इसके माध्यम से व्यक्ति के लोक-परलोक दोनों सुधरते हैं। उन्होंने सत्य, कर्म, धर्म और अहिंसा के रास्ते पर चलने की सीख दी। लेकिन यह भी कहा कि धर्म पर संकट हो तो शांति के उपदेश से कहीं ज्यादा शस्त्र उठाने आवश्यक होते हैं। भागवत कथा को 11 अक्टूबर के दिन विश्राम मिलेगा।

दीपका पुलिस ने अवैध कच्ची महुआ शराब बिक्री करने वाले पर सर्जिकल स्ट्राइक की

कोरबा(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक कोरबा श्री सिद्धार्थ तिवारी अति0 पुलिस अधीक्षक कोरबा श्री यूबीएस चैहान, नगर पुलिस अधीक्षक दर्री श्री विमल कुमार पाठक के मार्गदर्शन पर लगातार जुआ, सट्टा, आबकारी एवं नारकोटिक्स एक्ट की कार्यवाही हेतु निर्देशित करने के परिपालन में थाना प्रभारी दीपका प्रेमचंद साहू के नेतृत्व में दीपका पुलिस टीम के द्वारा लगातार कठोर कार्यवाही कि जा रही है। इसी क्रम में अवैध कच्ची महुआ शराब बना कर बिक्री करने वाले पर कार्यवाही करने में दीपका पुलिस कोरबा को सफलता प्राप्त हुई है। दिनांक 06.10.2024 को मुखबीर सूचना के आधार पर ग्राम केराकछार निवासी लक्ष्मी जायसवाल के घर में रेड की कार्यवाही की गई और शराब निर्माण करने वाले भट्टी को ध्वस्त किया गया और 23 लीटर कच्ची महुआ शराब तथा शराब बनाने की सामग्री को जप्त कर धारा 34(2) आबकारी अधिनियम के तहत अपराध पंजीबद्ध कर आरोपिया को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर बुधवार 09 अक्टूबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय आधुनिक युग में रामलीला की प्रासंगिकता

पूरी न्यायपालिका प्रभावित

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि हलकी, अप्रासंगिक टिप्पणियों से ना सिर्फ जजों की नकारात्मक छवि बनती है, बल्कि पूरी न्यायपालिका प्रभावित होती है। स्वागतयोग्य है कि अब सुप्रीम कोर्ट ने न्यायपालिका की छवि की रक्षा करने की पहल की है। इससे ज्यादा अफसोस की बात और क्या होगी कि सुप्रीम कोर्ट को उच्चतर न्यायपालिका के जजों को जुबान पर काबू रखने के लिए चेतावनी जारी करने पड़े! लेकिन ऐसी ही स्थिति हमारे सामने है। कर्नाटक हाई कोर्ट के जज वी. श्रीशानंद की सांप्रदायिक एवं स्त्री-द्रोही टिप्पणियों से परेशान सुप्रीम कोर्ट ने अपनी पहल पर पांच जड्डुजों की बेंच बनाई। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली इस बेंच ने बुधवार को निर्णय दिया कि जस्टिस श्रीशानंद का बेंगलुरू के एक इलाके को %पाकिस्तान' बताना सैंवैधानिक रूप से गलत है। साथ ही कोर्ट ने जजों के लिए आम चेतावनी जारी की। कहा कि वे ऐसी हलकी टिप्पणियां ना करें, जिनसे उनके सांप्रदायिक एवं स्त्री-द्रोही पूर्वाग्रह जाहिर होते हों। जस्टिस श्रीशानंद ने एक महिला अधिवक्ता को संबोधित करते हुए महिलाओं के लिए अपमानजनक बातें कही थीं। यह सुनना अजीब लगता है, लेकिन यह अफसोसनाक स्थिति आज की हकीकत है कि जज सामान्य विवेक को आहत करने वाली बातें कह डालते हैं। जजों को कैसे बोलना चाहिए, अगर यह सुप्रीम कोर्ट को बताना पड़ रहा है, तो न्यायपालिका आज किस हाल में है, इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा- मामले से असंबंधित स्त्री-द्रोही या पूर्वाग्रहयुक्त अन्य टिप्पणियां करने के बजाय जजों को अनिवार्य रूप से संविधान के ऊसलों का पालन करना चाहिए।' वैसे यह सुप्रीम कोर्ट के लिए भी आत्म-मंथन का विषय है कि उसकी कॉलेजियम प्रणाली ऐसे व्यक्तियों को हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट में जज बनाने की सिफारिश कैसे कर डालती है, जो बाद में इस तरह की बातें कोर्ट रूम बोलते हैं? आखिर ऐसी टिप्पणी का यह कोई अकेला मामला नहीं है। हाल के वर्षों में जजों की ओर से संविधान की भावना के खिलाफ जाकर टिप्पणियां करने के मामले बढ़ते चले गए हैं। खुद सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि हलकी, अप्रासंगिक टिप्पणियों से ना सिर्फ जजों की नकारात्मक छवि बनती है, बल्कि उससे पूरी न्यायपालिका पर खराब असर पड़ता है। स्वागतयोग्य है कि अब सुप्रीम कोर्ट ने न्यायपालिका की छवि की रक्षा करने की जिम्मेदारी उठाई है।

डा. रविंद्र सिंह

रामलीला मंचन के दौरान कलाकारों और दर्शकों की आराध्य देव के प्रति आस्था और समर्पण उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक साबित होता है। यह समर्पण उनके व्यक्तित्व को निखारता है, उन्हें एक नई दिशा भी देता है देवभूमि में रामलीला और रामायण देव-परम्परा देवभूमि हिमाचल प्रदेश की सबसे मूलभूत और सशक्त पहचान रही है। हमारे दैनिक जीवन, परम्पराओं, रीति-रिवाजों और जीवन मूल्यों पर देवी-देवताओं का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। वहीं, इन देवी-देवताओं की आस्था का अभिकेन्द्र भगवान रघुनाथ (भगवान श्रीराम) रहे हैं। जिस प्रकार से हिमाचली समाज देवी-देवताओं की आराधना करता है, उसी प्रकार से हमारे देवी-देवता भगवान रघुनाथ को अपना आराध्य देव मानते हैं। अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा में देवभूमि हिमाचल प्रदेश के देवी-देवता भगवान रघुनाथ के प्रति अपनी आस्था और श्रद्धा को अभिव्यक्त करते हैं। इस अवसर पर हर वर्ष भगवान रघुनाथ की एक भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है। सभी देवता इसमें उपस्थित होकर भगवान रघुनाथ का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सम्भवत: इसी कारण देवभूमि हिमाचल प्रदेश में रामलीला मंचन को लेकर विशेष आस्था और आकर्षण देखने को मिलते हैं। इस प्रकार, देव परम्परा के केंद्र में स्थित भगवान राम हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान का प्रमुख आधार हैं और उनके प्रति समर्पण रामलीला जैसे आयोजनों में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। तीन अक्तूबर से शारदीय नवरात्र शुरू हो गए हैं। इस दौरान हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कस्बों और गांवों में रामलीला का मंचन भी प्रारम्भ होगा। इसमें भगवान श्रीराम की जीवन यात्रा का नाटकीय रूप से प्रस्तुतीकरण किया जाता है। रामलीला में स्थानीय कलाकार पारम्परिक वेशभूषा धारण करके रामायण के पात्रों को जीवंत करते हैं। इस लोक नाट्य रूप में मंचित रामलीला में गीत, संगीत, नृत्य और संवाद के माध्यम से भगवान राम की कथा का मंचन किया जाता है। यह रामलीला लोगों को भगवान राम के आदर्श जीवन की स्मृति दिलाती है और समाज को धर्म और मर्यादा का पालन करने की प्रेरणा देती है।

इससे समाज में आपसी सद्भाव और धार्मिकता को बल मिलता है। इस प्रकार रामलीला का मंचन हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर को सजीव रखता है और देव समाज की धार्मिक आस्थाओं को मजबूत करता है। हिमाचल प्रदेश में रामलीला का मंचन केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता और एकता का भी एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक है। रामलीला की विशेषता यह है कि इसमें हर जाति, मत और वर्ग के लोग एक साथ मिलकर भाग लेते हैं। विभिन्न समुदायों से आने वाले लोग एक क्लब या समूह में शामिल होकर रामायण की कथा का सामूहिक मंचन करते हैं। इसमें किसी भी प्रकार का जातीय भेदभाव या सामाजिक असमानता नहीं होती, बल्कि सभी समान रूप से भगवान राम के आदर्शों और रामायण की शिक्षाओं को प्रस्तुत करने के लिए सहयोग करते हैं। इससे सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में एक सकारात्मक प्रयास होता है। यह प्रक्रिया समाज में समानता और सहिष्णुता को प्रकट करती है, जिसमें सब लोग धर्म और संस्कृति के प्रति अपनी आस्था और समर्पण को साझा करते हैं। इससे समाज में सामाजिक एकता का संदेश प्रसारित होता है। इस प्रकार रामलीला हिमाचल प्रदेश में धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम होने के साथ-साथ सामाजिक समरसता का प्रतीक भी है, जो पूरे समाज को एकजुट रखने में सहायक है। रामलीला मंचन भारतीय संचार परम्परा की एक अनूठी एवं प्रभावशाली परम्परा है। मध्यकाल से ही भारत में रामलीला का मंचन होता आ रहा है। इसके बावजूद दर्शकों में इसके प्रति आकर्षण कभी कम नहीं हुआ है। हर वर्ष रामलीला मंचन की विषयवस्तु एक ही रहती है। दर्शकों को मालूम होता है कि किस समय कौनसा दृश्य आएगा। हर साल इसका कथानक और घटनाक्रम समान रहता है, फिर भी यह हर बार दर्शकों के लिए नई प्रेरणा और अनुभव लेकर आता है। यह दर्शाता है कि किस प्रकार भारतीय संचार परम्पराएं स्थायित्व और ताजगी के साथ पुनरावृत्ति में भी प्रभावी होती हैं। इस प्रकार रामलीला केवल धार्मिक नाटक भर नहीं है, बल्कि यह संवाद का एक जीवंत उदाहरण है, जिसमें समाज के हर वर्ग के लोग एकत्र होकर सांस्कृतिक अनुभव साझा करते हैं। हिमाचल प्रदेश में रामलीला मंचन की परम्परा निरंतर समृद्ध होती जा रही है। हर वर्ष नए क्लब खड़े हो रहे हैं। खास बात यह कि ये रामलीला क्लब और कार्यक्रम बिना किसी सरकारी प्रश्रय के आगे बढ़ रहे हैं। समाज ही इन कार्यक्रमों के संचालन के लिए संसाधनों की व्यवस्था करता है। सामाजिक सहयोग के बलबूते ही यह आयोजन निरंतर बढ़ रहे हैं। हालांकि पिछले कुछ समय कुछ स्थानों पर इन मंचों पर अश्लीलता को भी स्थान मिलने लगा था। मगर समाज के उचित दखल और इस मंच की मर्यादा को समझते हुए इस कुप्रथा पर विराम लगा है। यह एक सुखद संकेत है। रामलीला मंचन करने वाले कलाकार और देखने के लिए आने वाले दर्शक अपने आराध्य देव के प्रति सच्ची आस्था और समर्पण भाव लेकर आते हैं। सभी देवता इसमें उपस्थित होकर भगवान रघुनाथ का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सम्भवत: इसी कारण देवभूमि हिमाचल प्रदेश में रामलीला मंचन को लेकर विशेष आस्था और आकर्षण देखने को मिलते हैं। इस प्रकार, देव परम्परा के केंद्र में स्थित भगवान राम हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान का प्रमुख आधार हैं और उनके प्रति समर्पण रामलीला जैसे आयोजनों में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। तीन अक्तूबर से शारदीय नवरात्र शुरू हो गए हैं। इस दौरान हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कस्बों और गांवों में रामलीला का मंचन भी प्रारम्भ होगा। इसमें भगवान श्रीराम की जीवन यात्रा का नाटकीय रूप से प्रस्तुतीकरण किया जाता है। रामलीला में स्थानीय कलाकार पारम्परिक वेशभूषा धारण करके रामायण के पात्रों को जीवंत करते हैं। इस लोक नाट्य रूप में मंचित रामलीला में गीत, संगीत, नृत्य और संवाद के माध्यम से भगवान राम की कथा का मंचन किया जाता है। इसलिए नशाखोरी जैसी बुराइयों को समाप्त करने से लेकर सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने की दृष्टि से रामलीला का मंचन अत्यंत उपयोगी रहा है। अत: हिमाचल प्रदेश में जब पिछले कुछ समय से नशाखोरी की आदत बढने लगी है, रामलीला से अधिक से अधिक युवाओं को जोडक़र नशामुक्त समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। रामलीला मंचन के दौरान कलाकारों और दर्शकों की आराध्य देव के प्रति आस्था और समर्पण उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक साबित होता है। यह समर्पण न केवल उनके व्यक्तित्व को निखारता है।बल्कि उन्हें एक नई दिशा देने में भी मदद करता है। क्लब का कोई सदस्य अगर नशाखोरी की चपेट में आ भी गया हो, तो रिहर्सल शुरू होने से लेकर दशहरा तक वह इससे दूर रहने का संकल्प लेता है। इसके प्रभाव में कई युवाओं ने हमेशा-हमेशा के लिए नशा छोडक़र बेहतर जीवन जीना शुरू किया है। हिमाचल में नशाखोरी की समस्या के प्रचलन के मद्देनजर, रामलीला मंचन युवा पीढ़ी को इस बुराई से दूर रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। रामलीला की प्रासंगिकता यही है।

आलेख

कई बुजुर्ग अपने अपमान के विरुद्ध ख़ामोश रहते ही हैं

रजनीश कपूर

सभी वरिष्ठ नागरिकों शायद को %माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरणपोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007' के कानून की जानकारी रखनी चाहिए ताकि अपने साथ हो रहे दुर्व्यवहार और अपमान के ख़िलाफ़ न्याय लेने के लिए कोर्ट भी जा सकते हैं। माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरणपोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007' के तहत ऐसे तमाम प्रावधान हैं जहां बुजुर्गों की सुरक्षा व देखभाल का ख़्याल रखा गया है। आधी दुनिया पर विजय पाने वाला सिकंदर-ए-आज़म जब अपने देश वापिस लौट रहा था तो उसका स्वास्थ्य इतना बिगड़ा की वह मरणासन्न स्थिति में पहुँच गया। अपनी मृत्यु से पहले सिकंदर ने अपने सेनापतियों और सलाहकारों को बुलाया और कहा की मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरी तीन इच्छाएँ पूरी की जाएँ। उन तीन इच्छाओं में से एक इच्छा थी। मेरी अर्थी में मेरे दोनों हाथ बाहर की ओर रखे जाएं ङ्क इससे लोग समझ सकें की जब मैं दुनिया से गया तो मेरे दोनों हाथ खाली थे। इंसान आता भी खाली हाथ है और जाता भी खाली हाथ है। परंतु इस बात को बिना समझे, हम हर पल अधिक से अधिक संपत्ति और धन अर्जित करने की दौड़ में लग जाते हैं। आए दिन हमें यह देखने को मिलता है कि किसी बुजुर्ग को, पैसे और संपत्ति के लालच में उसी की संतान ने घर से बेघर कर दिया। ऐसा अक्सर उन परिस्थितियों में होता है जब बच्चों को सही संस्कार नहीं दिये जाते। ऐसा अक्सर तब भी होता है जब घर के बड़े-बुजुर्ग अपने मोह और स्नेह के चलते, अपने जीते-जी ही अपनी चल-अचल संपत्ति के सभी उत्तराधिकार अपने बच्चों को दे देते हैं। जो संतान संस्कारी होती है वे बिना किसी लोभ या स्वार्थ के, अंतिम समय तक अपने माता-पिता की सेवा करते हैं। परंतु ऐसी भी संतान होतीं हैं जिन्हें जैसे ही इस बात का पता चलता है कि माता-पिता ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी बना दिया है, वैसे ही उनका अपने माता-पिता के प्रति व्यवहार बदलने लगता है। परंतु सभी वरिष्ठ नागरिकों शायद इस बात की जानकारी नहीं है कि माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरणपोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007' के तहत वे अपने साथ हो रहे दुर्व्यवहार और अपमान के ख़िलाफ़ न्याय लेने के लिए कोर्ट भी जा सकते हैं। माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरणपोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007, भारत सरकार का एक अधिनियम है जो वरिष्ठ नागरिकों और माता-पिता के भरण-पोषण और देखभाल के लिए कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है। इस अधिनियम के तहत, बच्चों और उत्तराधिकारियों द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को भरण-पोषण देना कानूनी दायित्व है। इस अधिनियम के तहत, राज्य सरकारों को हर ज़िले में वृद्धाश्रम स्थापित करने के प्रावधान भी हैं। अगर कोई वरिष्ठ नागरिक अपनी आय या संपत्ति से अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ है, तो वह अपने बच्चों या रिश्तेदारों से भरण-पोषण के लिए आवेदन कर सकता है। अगर कोई व्यक्ति, किसी वरिष्ठ नागरिक की देखभाल या संरक्षण प्राप्त करने के बाद उसे उपेक्षित किसी जगह छोड़ देता है, तो उसे तीन महीने तक की जेल हो सकती है या पांच हज़ार रुपये तक का जुर्माना या दोनों हो सकते हैं। अगर किसी वरिष्ठ नागरिक के बच्चे नहीं हैं, तो वह भी मेंटेनेंस के लिए दावा कर सकता है। अगर किसी वरिष्ठ नागरिक की संपत्ति का इस्तेमाल रिश्तेदार कर रहे हैं, तो सम्पत्ति का इस्तेमाल करने वाले या उसके वारिस पर बुज़ुर्ग की देखभाल के लिए दावा किया जा सकता है। इतना सब कुछ होते हुए भी हमें अक्सर यही सुनने को मिलता है कि बुजुर्गों को उन्हीं के खून द्वारा अपमानित व उपेक्षित किया जाता है। ऐसे में कई बुजुर्ग जिन्हें इस अधिनियम की जानकारी नहीं है वे तो अपने अपमान के विरुद्ध ख़ामोश रहते ही हैं। साथ ही ऐसे भी बुजुर्ग हैं जो समाज में अपनी व अपने बच्चों की मर्यादा और इज़्ज़त की ख़ातिर क़ानूनी सलाह या कार्यवाही नहीं करते। बीते दिनों दिल्ली से सटे नोएडा की एक खबर आई जहां 85 वर्ष के एक वरिष्ठ पत्रकार को अपने ही घर से बेघर होने की स्थित का सामना करना पड़ा। उन्होंने एक-एक पाई जोड़ कर सन् 2000 में एक फ्लैट खरीदा। 205 में जब उनकी इकलौती बेटी शादी विफल हुई तो वो अपने पुत्र के साथ अपने पिता के घर में रहने लगी। कई वर्षों तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। 2022 में अपनी पुत्री के प्रति स्नेह के चलते उन्होंने अपने फ्लैट को एक %गिफ्ट डीड' के ज़रिये अपनी बेटी के नाम कर दिया।

अहिंसा सबसे महान धर्म,परंतु वह सत्य में ही प्रतिष्ठित है

अशोक प्रवृद्ध

श्रीकृष्ण ने दुष्टता करने वाले मनुष्य की दुष्टता को कुचल देने का उपदेश देता हुए कहा है- विनाशाय च दुष्कृताम्। अर्थात- दुष्टता करने वाले मनुष्य की दुष्टता को कुचल दो। ऐसा करके ही अहिंसा का पालन व सत्य की रक्षा अनेक अवसरों पर होती है। इसलिए मनुष्यों को अहिंसा का प्रयोग करते हुए विवेक से कार्य लेना चाहिए। एक सीमा तक ही लोगों का बुरा व्यवहार सहन करना चाहिए और उसके नहीं सुधरने पर उसका समुचित निराकरण यथायोग्य व उससे भी कठोर व्यवहार करके करना चाहिए। भारतीय परंपरा में अहिंसा और सत्य भाषण समस्त प्राणियों के लिए अत्यंत हितकर माने गए हैं। अहिंसा सबसे महान धर्म है, परंतु वह सत्य में ही प्रतिष्ठित है। सत्य के ही आधार पर श्रेष्ठ पुरुष के सभी कार्य आरंभ होते हैं। महाभारत, वनपर्व में कहा गया है

अहिंसा परमो धर्म: स च सत्ये प्रतिष्ठित:।

अर्थात- अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है और सत्य पर ही टिका होता है। सत्य में निष्ठा रखते हुए सारे काम संपन्न होते हैं। वेद सत्य ज्ञान की पुस्तक है। वेद का अर्थ ही ज्ञान होता है। सत्य का अर्थ सत्तावान होता है। जिस पदार्थ की सत्ता है, उसके गुण, कर्म व स्वभाव अवश्य होते हैं, उनका यथार्थ अथवा ठीक -ठीक ज्ञान सत्य कहलाता है। ईश्वर की सत्ता है तथा जीवात्मा और प्रकृति की भी सत्ता है। इसलिए यह तीनों पदार्थ सत्य कहे व माने जाते हैं। इसी तरह ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के गुण, कर्म व स्वभाव का यथार्थ ज्ञान सत्य कहा जाता है। ईश्वर का प्रथम प्रमुख नाम ही सच्चिदानन्दस्वरूप है। सच्चिदानन्द तीन शब्दों का समुदाय है, जिसमें सत्य, चित्त और आनन्द इन तीन गुणों का समावेश है। सत्य किसी पदार्थ की सत्ता को कहते हैं। ईश्वर है और उसकी सत्ता भी है, यह यथार्थ है। इसलिए ईश्वर को सत्य कहा गया है। वैदिक मत के अनुसार सत्य पर ही अहिंसा प्रतिष्ठित होता है। अहिंसा परम धर्म, परम तप और परम सत्य है, क्योंकि उसी से धर्म की प्रवृति होती है। महाभारत आदि पर्व, पौलोम पर्व 11/12, 11/13, अनुशासन पर्व, दानधर्म पर्व 116/28, 245/4 आदि श्लोकों में अहिंसा परमो धर्म: कहा गया है। महाभारत अनुशासनपर्व, दानधर्म पर्व 116/28 के अनुसार अहिंसा परम धर्म, परम संयम, परम दान, परम तपस्या है। महाभारत अनुशासन पर्व दानधर्म पर्व 245/4 के अनुसार अहिंसा परम धर्म, परम सुख है। वैदिक ग्रंथों में में अहिंसा को परमपद बताया गया है। महाभारत अनुगीतापर्व आश्व मेधिकपर्व 43/20 व 43/21 के अनुसार अहिंसा सबसे श्रेष्ठ धर्म है और हिंसा अधर्म का लक्षण (स्वरूप) है। अहिंसा का अर्थ होता है अ-हिंसा अर्थात हिंसा न करना। दूसरों के प्रति वैर भावना का त्याग करना। किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान नहीं पहुंचाना। मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वार भी नुकसान न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में किसी भी प्राणी कि हिंसा न करना, यह अहिंसा है। दूसरों के प्रति वैर भाव अथवा कोई निजी स्वार्थ होने पर ही हम दूसरों के प्रति हिंसा करते हैं, जबकि कोई यह नहीं चाहता कि दूसरे लोग व प्राणी उनके प्रति हिंसा करें। हिंसा जिसके प्रति की जाती है, उसको हिंसा से दुःख व पीड़ा होती है। इसीलिए यदि हम चाहते हैं कि कोई हमारे प्रति हिंसा का व्यवहार न करे तो हमें भी दूसरों के प्रति हिंसा का त्याग करना होगा। दूसरों के प्रति अपने मन व हृदय में प्रेम व स्नेह का भाव उत्पन्न करने पर ही हिंसा दूर हो सकती है। इससे मन व हृदय में शांति उत्पन्न होगी, जिससे हमारा मन व मस्तिष्क ही नहीं अपितु शरीर भी स्वस्थ एवं दीर्घायु को प्राप्त होगा। इसलिए हर उस व्यक्ति को दूसरे प्राणियों के प्रति अहिंसा का व्यवहार करने के लिए उद्यत रहना चाहिए, जो दूसरों के द्वारा अपने प्रति हिंसा का व्यवहार करना पसन्द नहीं करते। महाभारत मोक्षधर्म पर्व शांतिपर्व 256/3 में हिंसा की निंदा की गई है-

अव्यवस्थितमर्यादैर्विमूढ़ैर्नास्तिकैर्नरै:।
संशयात्मभिरव्यक्तैर्हिंसा समनउवर्णइतआ।

अर्थात- जो धर्म की मर्यादा से भ्रष्ट हो चुके हैं, मूर्ख हैं, नास्तिक हैं तथा जिन्हें आत्मा के विषय में संदेह है एवं जिनकी कहीं प्रसिद्धि नहीं है, ऐसे लोगों ने ही हिंसा का समर्थन किया है। वैदिक ग्रंथों में ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति सहित मनुष्य के कर्तव्यों व मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य का यथार्थ बोध कराया गया है। दूसरों को पीड़ा देना अधर्म कहलाता है। मनुष्य हो या पशुङ्कपक्षी, किसी को भी पीड़ा देना अधर्म व महापाप होता है। दूसरों को पीड़ा देना उनके प्रति हिंसा ही कही जाती है। इसलिए सबको अहिंसक स्वभाव व भावना वाला बनना चाहिए। ऐसा होने पर ही सही मायने में व्यक्ति में मनुष्यता के लक्षण दिखाई देते हैं। वेद मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा व आज्ञा देते हैं- मनुर्भव। इस एक शब्द में ईश्वर ने वेद के द्वारा मनुष्य को मनुष्य बनने अर्थात मननशील होकर सत्य का ज्ञान प्राप्त करने व उसका आचरण करने की प्रेरणा दी है। सबसे यथायोग्य व्यवहार करने की आज्ञा दी है। यथायोग्य का अर्थ होता है जैसे को तैसा। इस सिद्धांत पर नहीं चलने से हम असत्य व हिंसक आचरण करने वाले मनुष्य का सुधार नहीं कर सकते। हमारे विरोध न करने से उसकी हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। इसका दोष हम पर ही होगा। मनुष्य को सुधारने के चार तरीके होते हैं- साम, दाम, दण्ड और भेद। जो व्यक्ति सज्जन है उसे प्रेम से समझाया जा सकता है। यदि वह नहीं सुधरता तो कुछ दमन करना होता है। उस पर भी यदि वह न सुधरे और हिंसा का आचरण करे तो फिर उसको दण्ड अथवा अल्प हिंसा से युक्त दण्ड देकर ही सुधारा जा सकता है। अहिंसा का यह अर्थ कदापि नहीं होता कि कोई हमारे प्रति हिंसा का व्यवहार करे और हम मौन होकर उसे सहन करें। यदि ऐसा करेंगे तो हिंसक मनुष्य का स्वभाव और अधिक हिंसा वाला होगा और वह अन्य सज्जन लोगों को भी दुःख देगा। वेद हिंसक मनुष्य या प्राणियों के प्रति यथायोग्य व्यवहार की ही प्रेरणा देते हैं। इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने दुष्टता करने वाले मनुष्य की दुष्टता को कुचल देने का उपदेश देता हुए कहा है।

देश के मुसलमान अब बहकावे में नहीं आते

योगेंद्र योगी

इसी तरह सोशल मीडिया पर बेवजह की बहस की जाती रही है। इसके बावजूद देश के मुसलमानों ने ठंडा रुख रखा, कोई ऐसी प्रतिक्रिया नहीं दी जिससे कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती उत्पन्न हो देश के मुसलमानों को गुमराह करने और भडक़ाने की कोशिशें अब नाकाम होने लगी हैं। मुसलमानों को शायद समझ आ गया है कि किस तरह राजनीतिक षड्यंत्रों से दूर रह कर अपने विकास पर ध्यान देना है। यही वजह है कि देश के मुसलमानों ने राजनीतिक दलों के नेताओं, मुल्ला-मौलवियों और हिंदुत्व के कट्टर समर्थकों के उकसावे वाले बयानों को गंभीरता से नहीं लिया। मुसलमानों को यह भी समझ में आ गया है कि चंद सिरफिरों की देशविरोधी हरकतों का समर्थन करने से उनकी कौम का नुकसान होगा। यही वजह है कि हाल ही में हिजबुल्ला के कट्टर आतंकवादी और सर्वोच्च रणनीतिकार हसन नसरुल्लाह के खात्मे के बाद देश से व्यापक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई। इसी तरह हमास और इजराइल युद्ध के दौरान मारे फ्लिीस्तिनियों को लेकर भी कमोबेश यही रुख कायम रहा। कश्मीर के कुछ इलाकों में सिरफिरों ने हिजबुल्लाह आतंकवादी हसन नसरुल्ला के मरने पर जरूर विरोध प्रदर्शन किया, किंतु देश के बाकी हिस्सों में शांति बनी रही। इसराइल-फिलिस्तीन युद्ध में केंद्र सरकार ने हमास की कड़ी निंदा की। मोदी सरकार इसराइल के साथ खड़ी नजर आई। इसराइल के खिलाफ भारत में बयानबाजी जरूर हुई, किन्तु ब्रिटेन और अमरीका की तरह कोई विरोध प्रदर्शन नहीं हुआ। गौरतलब है कि इन दोनों देशों में इसराइल के खिलाफ जबरदस्त रैलियां निकाली गई, धरने-प्रदर्शन किए गए। अमरीका में काफी बवाल हुआ। अमरीकी विश्वविद्यालय राजनीति का अखाड़ा बन गए। विश्वविद्यालयों पर पुलिस कार्रवाई की नौबत आ गई। मानवाधिकार और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का पाठ दुनिया को पढ़ाने वाले अमरीका की खूब किरकिरी हुई। कमोबेश यही हाल ब्रिटेन का हुआ। फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शनकारियों से निपटने में ब्रिटिश सरकार के हाथ-पैर फूल गए। यूरोप के कुछ देशों में भी इसी तरह के प्रदर्शन हुए। इजराइल ने हमास के सर्वोच्च राजनीतिक नेता इस्माइल हानिया को ईरान के दौरे के दौरान विस्फोट से उड़ा दिया। इस पर कई देशों में व्यापक प्रतिक्रिया हुई, किन्तु भारत में कहीं भी कोई विरोध प्रदर्शन नहीं हुआ। आश्चर्य की बात यह है कि भारत और विश्व के मुस्लिम

जगत से जुड़े मुद्दों को लेकर देश के मुसलमानों ने चुनिंदा स्थानों पर प्रतीकात्मक प्रतिक्रिया जताई, किन्तु कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने जमकर उछलकूद मचाई। मुसलमानों ने ऐसे मुद्दों को ज्यादा महत्व नहीं दिया। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 और 35-ए हटाए जाने के बाद कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने मुसलमानों का सच्चा हितैषी साबित करने के लिए जमकर विरोध किया। जम्मू-कश्मीर के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने नेशनल कान्फ्रेंस से चुनावी गठबंधन किया। शेख अब्दुल्ला की पार्टी नेशनल कान्फ्रेंस ने चुनावी घोषणा में धारा-370 को वापस लाने का ख्याली पुलाव पकाया है। कांग्रेस हिंदू वोटों की नाराजगी के डर से इस पर चुप्पी साधे हुए है। देश के मुसलमानों को यह समझ आ गया है कि जम्मू-कश्मीर का मुद्दा उनके हितों पर कोई असर डालने वाला नहीं है। यह मुद्दा देश के आम मुसलमानों का नहीं है। यह पाक परस्त आतंकवाद से जुड़ा हुआ मामला है। केंद्र सरकार ने तीन तलाक को खत्म कर दिया। मुस्लिम महिलाओं से जुड़े तीन तलाक के मुद्दे पर भी देश में सिर्फलखनऊ और पुणे में विरोध प्रदर्शन हुआ। यह प्रदर्शन भी ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के आह्वान पर हुआ। देश में अन्य हिस्सों में मुसलमानों ने इस पर कोई व्यापक प्रतिक्रिया नहीं जताकर पर्सनल लॉ बोर्ड के इरादों को विफल कर दिया। नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019 (सीएए) 11 दिसंबर 2019 को भारत की संसद द्वारा पारित किया गया था। इसने अफगानिस्तान, बांग्लादेश और पाकिस्तान से आए प्रताड़ित धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए भारतीय नागरिकता प्रदान करके नागरिकता अधिनियम 1955 में संशोधन किया। भारत में 2014 तक पात्र अल्पसंख्यकों को हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी या ईसाई बताया गया। सीएए के तहत देश के स्थायी निवासी मुस्लिम समुदाय को छोडक़र तीन मुस्लिम बहुल पड़ोसी मुल्कों से आने वाले बाकी धर्मों के लोगों को नागरिकता देने का प्रावधान है। सीएए के विरोध में मुद्दे पर कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने खूब हंगामा किया। इस कानून के तहत यह साफ जाहिर था कि देश में लंबे अर्से से रहने वाले मुसलमानों को इसके दायरे में शामिल नहीं किया गया है। इसके बावजूद विपक्षी दलों ने इस पर जबरदस्त विवाद पैदा करके मुसलमानों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया। इस मुद्दे पर कई दिनों तक वाद-विवाद हुआ। आखिरकार देश के मुसलमानों को समझ में आ गया कि सीएए से उनका कोई सरोकार नहीं है। यह कानून सिर्फ बाहर से आए अवैध मुसलमानों पर लागू होगा। यही वजह रही कि इस मुद्दे पर विपक्षी दलों का देश के मुसलमानों ने साथ नहीं दिया।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, बुधवार 09 अक्टूबर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

आचार्य विशुद्ध सागर पट्टाचार्य महोत्सव हेतु आचार्य वर्धमान सागर जी को आमंत्रण पत्रिका भेंट

पारसोला/राजस्थान (विश्व परिवार)। श्री सुमित धाम गुरु भक्त परिवार द्वारा आगामी अप्रैल- मई 2025 में सुमित धाम इंदौर में आयोजित होने वाले आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के पट्टाचार्य महोत्सव का भव्य आमंत्रण पत्र पारसोला में चातुर्मास कर रहे आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के कर कमलों में ब्र0 भईया पीयूष के साथ श्री मनीष श्रीमती सपना गोधा द्वारा समर्पित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी श्री हंसमुख गांधी इंदौर आदि भी उपस्थित रहे।

श्री शीतलनाथ भगवान का मोक्षकल्याणक महा महोत्सव 11 अक्टूबर को

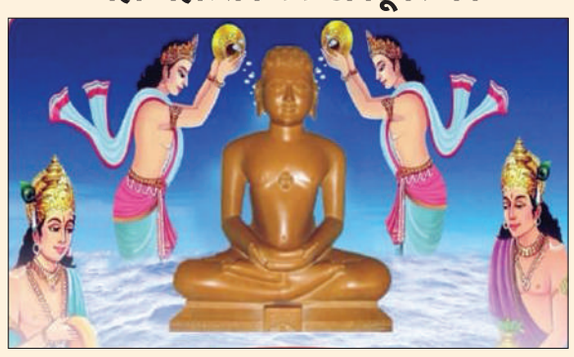

विदिशा (विश्व परिवार)। जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर भगवान श्री शीतलनाथ की गर्भ, जन्म, तप तथा केवलज्ञान कल्याणक भूमि विदिशा नगर के शीतलधाम में मोक्षकल्याणक महा महोत्सव संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागरजी महामुनिराज के शिष्य एवं आचार्य समयसागर महाराज के आज्ञानुवर्ती निर्यापक श्रमण मुनि श्री नियमसागर महाराज स संघ सानिध्य में 11 अक्टूबर शुक्रवार को विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। प्रात:काल 7 बजे भगवान की शोभायात्रा शीतलधाम परिसर में 7:30 बजे से मंगलाष्टक के साथ अभिषेक एवं शांतीधारा नित्यनियम पूजन के साथ भगवान शीतलनाथ की महापूजन एवं निर्वाण भूमी श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थ की भावना भाते हुये निर्वाण लाडू समर्पित किया जाऐगा। एवं8ः45 से मुनि श्री के प्रवचन होंगे। सांयकाल 6ः30 से शंकासमाधान एवं8 बजे से महाआरती संपन्न होगी। सकल दि. जैन समाज एवं श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र शीतल विहार न्यास तथा चातुर्मास कमेटी के समस्त पदाधिकारियों एवं शीतल महिला मंडल ने नगर के समस्त धर्म श्रद्धालुओं से कार्यक्रम में पधारने की अपील सभी साधर्मी वंधुओ से की है।उपरोक्त जानकारी मीडिया प्रभारी एवं प्रवक्ता अविनाश जैन ने दी।

कैलाश रेजीडेंसी स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में विमानोत्सव व वार्षिक कलशाभिषेक संपन्न

झांसी (विश्व परिवार)। पर्यूषण पर्व उपरांत वार्षिक कालसभिषेक के क्रम में आज कैलाश रेसिडेसी स्थित श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में वार्षिक कालसभिषेक एवं विमान उत्सव का आयोजन किया गया इस अवसर पर चतुर्मासरत आचार्य विशद सागर जी महाराज ससंग मौजूद रहे। आरंभ में श्री जी की प्रतिमा को विमान की में विराजमान कर बैंड बाजा के साथ शोभायात्रा के रूप में कैलाश रेजिडेंसी से महाकाली विद्यापीठ मार्ग से अजय एंक्लेव के विभिन्न मार्गो से होकर वापस कैलाश रेजिडेंसी लाया गया। जहां यह शोभायात्रा धर्म सभा में परिवर्तित हो गई। इस अवसर पर विद्वान प्रदीप शास्त्री जी द्वारा भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा कराई गई। सभा में आचार्य श्री विशद सागर जी ने लोगों से धर्म की राह पर चलने का आह्वान किया। इस अवसर पर उन्होंने आगामी 11 अक्टूबर को दीनदयाल सभागार में आयोजित दीक्षा समारोह की जानकारी भी दी। इस अवसर पर नगर के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने सहभागिता की। सभा का संचालन प्रमोद जैन वैरायटी एवं आभार महामंत्री चक्रेश जैन ने व्यक्त किया।

राज्यपाल रमेन डेका ने डोंगरगढ़ में माँ बम्लेश्वरी की पूजा-अर्चना की

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने आज डोंगरगढ़ पहुंचकर माँ बम्लेश्वरी की पूजा-अर्चना की। उन्होंने माँ बम्लेश्वरी से प्रदेशवासियों की खुशहाली, उन्नति व सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर राज्यपाल के परिजन भी उपस्थित थे। राज्यपाल ने ज्योति कलश के दर्शन किए एवं हवन कुण्ड की पूजा की। इस अवसर पर राज्यपाल श्री रमेन डेका को कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल एवं पुलिस अधीक्षक श्री मोहित गर्ग ने पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित काफी-टेबल बुक भेंट की। इस अवसर पर मां बमलेश्वरी ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने राज्यपाल को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

धर्म वीतराग विज्ञान है, इसको जिसने समझ लिया, उसने विश्व को समझ लिया : आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी गुरुदेव

नांदणी (विश्व परिवार)। नांदणी मठ में, दिगम्बर जैनाचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी गुरुदेव ने धर्मसभा को संबोधन करते हुए कहा कि अंतिम तिर्थेश वर्धमान स्वामी के शासन में हम सभी विराजते हैं। तीर्थंकर भगवान की पीयूष देशना जिनेंद्रवाणी जगतकल्याणी है। यह सर्वज्ञशासन, नमोस्तुशासन जयवन्त हो। जयवन्त हो वितरागी श्रमणसंस्कृती।

आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी गुरुदेव ने कहा कि ज्ञानियों किसी से भी तुरंत प्रभावित नहीं होना। मित्रों जानों इस रहस्य को, आप खाना लेकर दुकान जाते ही होंगे, कभी न कभी अपने पिताजी के लिए भी दुकान पर खाना लेकर गए होंगे, आप उस दिन भी भोजन लेकर गए थे जिस दिन रिमझिम रिमझिम बारिश गिर रही थी, लेकिन टिफिन बंद था, पानी की बूंदे टिफिन पर गिरी थी। पर भीतर रखी खीर, पूड़ी को कुछ नहीं हुआ। मित्रों जब सीलबंद टिफिन में पानी की बूंदे कुछ नहीं कर सकी, ऐसे आप चाहो देश विदेश में कही भी जाओ, जैसे पैक टिफिन में पानी प्रवेश नहीं कर सका, ऐसे आप अप्रभावित रहना, अपना भी ढक्कन बंद करके रखना, चाहे आप देश में जाओ या विदेश में जाओ, धर्म कमाने जाना। आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी गुरुदेव ने कहा कि विज्ञान धर्म हो न हो, लेकिन धर्म विज्ञान है। विज्ञान मात्र विज्ञान है, परंतु धर्म वीतराग विज्ञान है। इस वीतराग विज्ञान को जिसने समझ लिया, उस जीव ने विश्व को समझ लिया। सुखमय जीवन जीने के लिए आपने अज्ञान का आश्रय लिया है तो संक्लेषता को प्राप्त हुए। और सुखमय जीवन जीने के लिए आपने विज्ञान का आश्रय लिया है, विश्वास मानिए क्लेष से पूरित होंगे। मित्रों यदि आपने सुखमय जीवन जीने के लिए धर्म का आश्रय लिया है तो परम सुखी हो जाओगे।

आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी ने कहा कि लोग कहते हैं मैं निरोगी रहूं, स्वस्थ रहूं। विज्ञान कह रहा है गर्म पानी पियो। मित्रों विज्ञान जो कह रहा है वह मात्र शरीर को स्वस्थ करने के लिए गर्म पानी पिला रहा है, पर क्रूरता से भरा हुआ है। ज्ञानियों धर्म कहेगा जीवों की रक्षा करो, पानी को छानकर और प्रासुक करके पानी का प्रयोग करो। जीवों की रक्षा होगी। जब आप नाना जीवों की रक्षा करोगे, उसमें आप भी एक जीव हो। अप्रासुक बगैर छना पानी पियोगे तो शरीर में रोग होंगे।

आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी ने कहा कि अब आप सवाल करते हो कि किसी से प्रभावित नहीं होंगे तो विकास कैसे करेंगे। मित्रों आप तो एक चींटी को भी देखकर चलते हो, ताकि जीव हत्या न हो, आपके दादा ने सिखाया है कि किसी को सताना नहीं। एक माँ ऐसी जगह सर्विस कर रही थी, जहां उसको बच्चों को भोजन देना पड़ता है। एक दिन अधिकारियों ने कहा कि आप पहले भोजन खाओगे फिर बच्चों बच्चों को देंगे। उस मां ने कहा कि मैं नहीं खाऊंगी। तो उसे कहा गया कि आप पूरे बच्चों के अधिकारी हो, तो उस मां ने कहा हां मैं अधिकारी अवश्य हूं, लेकिन धर्म मेरा अधिकारी है। तब अधिकारियों ने उससे कहा आपको खाना ही पड़ेगा, उस मां ने कहा कि यहां अभक्ष भी बनता है, हम जैन हैं, मैं सर्विस छोड़ने को तैयार हूं लेकिन भोजन नहीं करूंगी। तब कार्य की योग्यता देखकर उन अधिकारियों को बदलना पड़ा, बोले ठीक है आप दूसरे को खिला देना परंतु आपका धर्म बोलता है तो मत खाना।

-अभिषेक अशोक पाटील

व्यक्ति की समीक्षा नहीं होती विचारों की समीक्षा होती है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

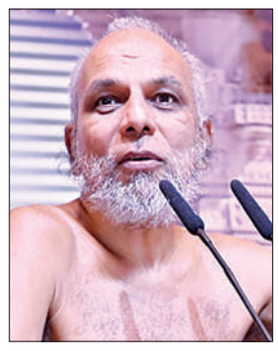

इंदौर (विश्व परिवार)। व्यक्ति की समीक्षा नहीं होती विचारों की समीक्षा होती है जित देखूँ तित तू यह भक्त की दृष्टि है, यदि वह अपने इष्ट को सर्वोच्च स्थान पर देखता है तो इसका मतलब यह नहीं कि, हमारे इष्ट ही सर्वश्रेष्ठ है, बाकी सब अश्रैष्ठ या तुच्छ है, यह मात्र भक्त की प्रभु के प्रति भक्ती की अभिव्यक्ति है जैन धर्म अनेकांत का उपासक है एवं समग्र चिंतन है। उपरोक्त उद्गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने आचार्य मानतुंगाचार्य के महाकाव्य भक्तामर स्त्रोत्र पर व्याख्यान देते हुये व्यक्त किये उन्होंने अनेकांत तथा एकांत की चर्चा करते हुये कहा कि आचार्य मानतुंगाचार्य भगवान की भक्ती में लीन है और कह रहे है कि मेंने अन्य सभी दर्शनों का भी अध्यन किया तथा अनेकांत जैन दर्शन का भी अध्यन किया तो मेंने अनेकांत मूलक इस दर्शन में सारी समस्याओं का समाधान पाया उन्होंने उदाहरण देते हुये कहा कि मीराबाई प्रभु भक्ती में लीन होकर कह रही है कि मेरा तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई इसका मतलब यह नहीं कि वह किसी और के प्रति अपनी अवज्ञा याअनादर का भाव कर रही है, यह तो उनके अपने इष्ट के प्रति भक्ती की चरम सीमा है।उसी प्रकार आचार्य श्री भगवान आदिनाथ की भक्ती में लीन है और शव्द उनके मुख से निकल रहे है आप ही सर्वश्रेष्ठ हो मुझे तो आपके अलावा और कोई दिखता ही नहीं प्रभु भक्ती में लीन मीरा बाई वृन्दावन गयी और बंहा पर वह संत जीवास्वामी से मिलना चाहती थी लेकिन जीवास्वामी स्त्रिओं से मिलते नहीं थे तो मीराबाई बोली में तो समझती थी यंहा पर सभी गोपियाँ ही गोपियाँ रहती है पर मुझे मालुम पड़ा कि गोपीओं के अलाबा भी कोई और है इस बाक्य ने जीवास्वामी के हृदय को परिवर्तित कर दिया। मुनि श्री ने कहा कि कयी बार हम लोग शव्दों को पकड़कर बैठ जाते है और अर्थ का अनर्थ कर बैठते है पहले के जमाने में शास्त्रार्थ हुआ करते थे शास्त्रार्थ करने बाले अनेक धर्मों का अध्यन भी करते थे तभी वह अपनी बात को तर्क सहित रख पाते थे। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन अनेकांत मूलक दर्शन है, आपने जो बस्तु के उत्पाद, व्यय, और धौर्य स्वरुप को प्रदर्शित करती है, यदि हमारी दृष्टी अनेकांत मय है तभी हमारी दृष्टि समग्र कहलाऐगी उन्होंने उदाहरण देते हुये कहा कि एक व्यक्ती पिता भी है तथा वह किसी का बेटा भी है तथा उनका बेटा किसी का पिता भी है यही अनेकांत दृष्टि कहलाती है। ही से भी की ओर चलो उदाहरण के तौर पर में ही सत्य हूं के स्थान पर वह भी सत्य है यही अनेकांत है। इसलिये शव्दों को नहीं शव्दों के अर्थ को पकड़िये। समग्र दृष्टि से ही बस्तु के स्वरूप को पकड़ा जा सकता है, में ही सत्य हूं में एकांत है और बंहा झगड़ा है जबकि अनेकांत में वह भी सत्य है यह अनेकांत है जिसमें समाधान है। यही समग्र दृष्टि है जिसमें सभी समस्याओं का समाधान है।

धर्मप्रभावना समिति के प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी तथा मीडिया प्रभारी राहुल जैन स्पोर्ट्स ने बताया मुनिसंघ मोहताभवन रैसकोर्स रोड़ पर विराजमान है प्रात:काल 6 बजे से मुनि श्री निर्वैग सागर महाराज द्वारा जैनम् की कक्षा 7:30 बजे से अभिषेक एवं शांतीधारा 8:30 से9:30 तक मांगलिक प्रवचन 9:45 से आहारचर्या दौपहर तीन बजे से समयसार की बाचना तथा सांयकाल 5:45 से विश्वप्रसिद्ध शंकासमाधान कार्यक्रम प्रतिदिन संपन्न हो रहे है।एवं चैतन्य श्री की समाधी चल रही है। धर्म प्रभावना समिति के अध्यक्ष अशोक डोसी महोत्सव अध्यक्ष नवीन आनंद गोधा महामंत्री हर्ष जैन सहित समस्त पदाधिकारियों ने सभी श्रद्धालुओं से पधारने की अपील की है। **-अविनाश जैन**

जयपुर के इतिहास में प्रथम बार सामूहिक क्षमा वाणी मुख्यमंत्री आवास पर हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल जी शर्मा द्वारा कोटा के पारस जैन पाटनी पार्श्वमणि पत्रकार को वर्तमान युग के श्रवण कुमार और श्रीमती सारिका जैन सतयुग की नारी का गौरव प्रदान कर प्रशस्ति पत्र भेंट किया, सम्पूर्ण भारत में हर्ष की लहर

कोटा (विश्व परिवार)। राजस्थान की राजधानी जयपुर के इतिहास में पहली बार मुख्य मंत्री आवास पर सामूहिक क्षमा वाणी का आयोजन परम पूज्य आचार्य 108 शशांक सागर जी महाराज मुनि श्री पावन सागर जी महाराज ससंघ एक साथ दिगंबर और श्वेतांबर दस से अधिक संतो के मंगलमय सानिध्य में आयोजित किया गया। माननीय मुख्यमंत्री के साथ राजस्थान के आधे से अधिक मंत्री गण भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे और संतों का भाव भीना अभिनंदन और स्वागत किया जैन समाज के प्रबुद्धगण इस अवसर पर उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री आवास पर इस प्रथम आयोजन रहा जिसकी मुक्त कंठ से जैन समाज द्वारा प्रशंसा की जा रही है। कार्यक्रम के दौरान आचार्य श्री शशांक सागर महाराज द्वारा मुख्यमंत्री महोदय को धर्म जागृति संस्थान राजस्थान प्रान्त की ओर से प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान जन्मकल्याणक पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करने एवं क्षमा पर्व को राष्ट्रीय क्षमा दिवस घोषित करने का पत्र भी सुपुर्द किया गया। आयोजन का सफल संचालन मनीष वैद और ज्योति कोठारी ने करके आयोजन में चार चांद लगा दिए। वरिष्ठ पत्रकार राजेश जैन ददू ने जानकारी देते हुवे बताया कि कोटा के देव शास्त्र गुरु के परम भक्त व्यवहार कुशल प्रभाव शाली श्री विमल चंद जैन धर्मनिष्ठ सद संस्कावान श्रीमति शांति देवी के सुयोग्य सुपुत्र जैन समाज की अनमोल मणि युवा पत्रकार गौरव सर्व श्रेष्ठ संवाद दाता अवार्ड विजेता 15 लाख मासूम बच्चों को मांसाहारी होने से बचाने वाले भाव पूर्ण भजनों की शानदार प्रस्तुति देने वाले विगत 35 सालो से जैन पत्रकारिता में उल्लखनीय योगदान देने वाले अभी तक सात सौ से अधिक विराट मंचो पर अभिनंदन कर सम्मानित हुवे आर के पुरम त्रिकाल चौबीसी के प्रसार प्रचार मंत्री राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी जैन गजट पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार को आज विभिन्न संतो का मंगल आशीर्वाद प्राप्त है आपकी धर्म पत्नी सद संस्कारो से युक्त एस कैलाश जैन श्रीमती कोशल्या जैन बारा की सुयोग्य सुपुत्री है। विगत 16 अगस्त 2022 विमल चंद्र जैन को ब्रेन परे लैसिस के शिकार हो गए। श्रीमती सारिका जैन और पार्श्वमणि जी रात दिन उनकी सेवा में लगे हुवे है उनको रोज सुबह महा मंत्र नमोकार मेरी भावना बारह भावना वैराग्य भावना तत्वाथ सूत्र भक्ता मर पाठ विनय पाठ सब सुनाते है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा जी के करकमलों द्वारा पारस जैन पार्श्वमणि वर्तमान के श्रवण कुमार और श्रीमती सारिका जैन को सतयुग की नारी की उपाधि का गौरव प्रदान कर प्रशस्ति पत्र अपार जन सैलाब के बीच प्रदान किया।

थूवोनजी के वार्षिक सम्मेलन के साथ हुए निर्विरोध चुनाव

सम्पूर्ण कार्यकारिणी का गठन 11 अक्टूबर को सागर में किया जायेगा

अशोक नगर (विश्व परिवार)। अंचल के सबसे बड़े तीर्थ अतिशय क्षेत्र दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी के वार्षिक सम्मेलन के साथ ही चुनावी प्रक्रिया का प्रथम चरण दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी निर्विरोध रुप से सम्पन्न हुआ जिसमें इक्की सदस्यो का चयन किया गया। अब सम्पूर्ण कार्यकारिणी का गठन 11 अक्टूबर को परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज के सान्निध्य में भाग्योदय तीर्थ सागर में किया जायेगा। वार्षिक सम्मेलन मध्यांचल तीर्थ कमेटी के निवृत्तमान अध्यक्ष अरविंद कुमार सिघई व अशोक नगर जैन समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल के आतिथ्य एवं कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल अध्यक्षता में वार्षिक सम्मेलन का आगाज बड़े बाबा के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ।

प्रथम चरण के साथ हो रहा है वार्षिक सम्मेलन-सम्मेलन के प्रारंभ में कमेटी के प्रचार मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि थूवोनजी कमेटी की नवीन कार्यकारिणी के प्रथम चरण चयन आज यहां होने जा रहा है इसके पहले हम वार्षिक सम्मेलन के अवसर सभी का अभिनन्दन करते हैं

कमेटी के महामंत्री विपिन सिंघई ने तीर्थ क्षेत्र पर चल रहे विकास कार्यों के संदर्भ में बात रखते हुए कहा कि मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद व मार्गदर्शन में कमेटी निरन्तर काम कर रही है वहीं निर्माण मंत्री विनोद मोदी ने निर्माण कार्य संबंधी जानकारी दी इस दौरान कमेटी के शिरोमणि संरक्षण संजीव श्रागर गौरव जैन टींगू मिल राकेश अमरोद मनोज भैसरवास सुभाष मोदी राजीव चन्देरी सहित अन्य प्रमुख जनो व पूर्व पदाधिकार रविकांत कासल गिरीश अथाईखेडा अरविंद जैन कचनार सुभाष जाट सौरव वाझल सहित अन्य प्रमुख जनो के वाद अध्यक्ष राकेश कासंल अपनी बात रखी।

दोस्ती वह है जो सुख दुःख में साथ निभा सके

हैदराबाद (विश्व परिवार)। सच में-सबको एक अच्छे दोस्त की आवश्यकता होती है। जो हमें-हमारी उन गलतियों से परिचित कराते हैं, जो हमारे जीवन के चहुंमुखी विकास में बाधक होती है, और उन अच्छाईयों से परिचित कराते हैं, जिसे हम अपने वाणी, व्यवहार में अपनाकर घर, परिवार, समाज और देश में नाम, प्रशन्सा, ख्याति, सद् व्यवहार से पहचान बनाने में कामयाब हो सकते हैं। दोस्त जन्म से नहीं मिलते-हमारे अच्छे-बुरे, वाणी-व्यवहार से बनते हैं। अच्छी दोस्ती निभाने के लिए कभी कभी कठिन दौर से भी गुजरना पड़ता है। इसलिए सच्चा और अच्छा दोस्त सिर्फ जन्मदिन और शादी की सालगिरह पर बधाई नहीं देता बल्कि घर परिवार की खुशी के वातावरण और व्यापार की उपलब्धियों का भी साथी होता है। अच्छी दोस्ती अनेक समस्याओं का समाधान भी है। दोस्त अपने दोस्त को दिल की बात बताने में कभी झिझकता भी नहीं है। हम कितने खुश है ये ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि हमसे कितने लोग खुश है यह बहुत महत्वपूर्ण है। दुर्भाग्य कहो इस सदी का आज रिश्तों में ही सबसे ज्यादा पाप और स्वार्थ घुस गया है, तभी तो वर्षों पुराने रिश्ते मिनटो में टूट जाते हैं।

यंग जैना अवार्ड 2024, बड़े बाबा के चरण सानिध्य में कुंडलपुर जी में भव्यता पूर्वक सम्पन्न

कुंडलपुर (विश्व परिवार)। परम पूज्य समा.आचार्य श्री विद्यासागर जी एवं विद्या शिरोमणि नवाचार्य समयसागर जी गुरुदेव के परम आशीर्वाद एवं पूज्य मुनिश्री क्षमा सागर जी महाराज की प्रेरणा से मैत्री समूह द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले यंग जैना अवार्ड (YJA) इस वर्ष प्रसिद्ध जैन तीर्थ कुंडलपुर (म.प्र.) में 5 एवं 6 अक्टूबर 2024 को भव्यता और गरिमा के साथ आयोजित हुआ। मैत्री समूह द्वारा आयोजित इस अनूठे कार्यक्रम में शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योग्यता प्राप्त करने वाले देश भर के जैन छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह, देश के विभिन्न तीर्थ स्थलों पर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। सन 2001 में शिवपुरी से शुरू हुए 'यंग जैन अवार्ड' में देशभर की विशिष्ट जैन प्रतिभाओं का सम्मान दो दिवसीय गरिमामय व भव्य समारोह में अत्यंत प्रबंधकीय कौशल व अनुशासन के साथ किया जाता है। इस आयोजन में विभिन्न विषयों के देश के जानेमाने कॅरियर कॉउंसलर एवं मनीषी देश के कोने कोने से आईं प्रतिभाओं को अपना उपयोगी एवं सारगर्भित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

मैत्री समूह के डॉ. सुमतिप्रकाश जैन एवं डॉ. सुबोध मारौरा द्वारा बताया गया कि इस वर्ष 2024 में कक्षा 10वीं में 85 प्रतिशत, 12वीं कक्षा साइंस में 80 प्रतिशत तथा आर्ट एवं कॉमर्स में 75 प्रतिशत या उससे अधिक एवं संघ लोकसेवा आयोग (PSC) में चयनित, जैन छात्र-छात्राओं की लगभग 2850 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं थीं। इनमें से विभिन्न चयन मापदंडो के आधार pr सर्वोच्च 210 प्रतिभाओं को इस समारोह में आत्मीयता के साथ सम्मानित करने हेतु आमंत्रित किया गया था।

इस दो दिवसीय प्रतिभा सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से दो माँ का सानिध्य मिला। प्रथम मुख्य अतिथि श्रीमति आभा सेठ खुरई देश के प्रसिद्ध श्री एस.पी.जैन गुरुकुल खुरई की संचालिका, एक जानीमानी कवियत्री, समाजसेविका हैं।

द्वितीय मुख्य अतिथि डॉ. सुधा मलैया जानी मानी राजनेता, नृत्यांगना, कवियत्री, समाज सेविका एवं कुलाधिपति एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह रहीं। जिन्होने अपने सारगर्भित उदबोधन से बच्चों को मार्गदर्शित किया। प्रथम दिन सत्र का उद्घाटन परम पूज्य आचार्य भगवान श्री विद्यासागर जी महाराज की आशीर्वाद से ध्वजारोहण के साथ ब्रह्म. विजय भैया लखनादौन के द्वारा कराया गया।

इस ज्ञान महोत्सव में प्रतिभाशाली बच्चों एवं उनके माता-पिता को कई सत्रों में प्रभावी जानकारी मिली। अनुभव जैन IIM Indore फाउंडर द स्कूल आफ ड्रीम ने Happiness & success पर स्टूडेंट्स से चर्चा की। इसी को आगे बढ़ाते हुए, मुनिश्री क्षमासागर जी के 4 तरह की शांति पर प्रवचन सुनाए गए।

डॉ राकेश गोदवानी अतिथि व्याख्याता IIM Banglore ने 5 sucess mantras बताए गए। यशवीर सिंह ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी ने चेंज मेकर पर रोचक सत्र लिया। अर्चना गहलोत, मनीष गहलोत IIT Bombay फाउंडर अस्माकं यूनिवर्सिटी ने पेरेंटिंग पर अभिभावकों से चर्चा की। प्रगति जैन फाउंडर अनुयोग इंस्टिट्यूट, बैंगलोर ने आहार ही औषधि पर टिप्स दिए और सभी के फिटनेस अंक निकाले। ब्र.गौरव भैया श्रमदान ने आचार्य श्री विद्यासागर जी के जीवदया आधारित अनेक प्रयासों को साझा किया। रोहित जैन, Baniyan roots उदयपुर ने ऑर्गेनिक फूड पर जानकारी दी और स्टॉल भी लगाया। जूली जैन और सुमी, अहमदाबाद ने मिलेट्स से कई व्यंजन बनाना सभी को सिखाया। इस अवसर पर एक भव्य सुसज्जित प्रदर्शनी पूज्य मुनि श्री क्षमा सागर जी के विचारों एवं काव्य यात्रा को केंद्रित कर लगाई गई।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर बुधवार 09 अक्टूबर 2024

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने संयुक्त जिला कार्यालय परिसर से बेटी बचाओं,बेटी पढ़ाओं योजनान्तर्गत जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।इस अवसर पर कलेक्टर ने कहा कि जागरूकता रथ में एलईडी के माध्यम से बेटियों के प्रति भेदभाव की समस्या पर अंकुश लगाने लोगों को जागरूक किया जायेगा।साथ ही दहेज के सामाजिक मानक,पितृसत्तामक आदि नकारात्मक सोच को बदलने के लिए जागरूकता रथ गांव-गांव जाकर बेटियों के प्रति सकारात्मक संदेश का प्रचार करेगा।भारत सरकार की बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना का जागरूकता रथ जिले के सभी विकासखण्डों के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों तथा शहरी क्षेत्रों में बेटियों के प्रति नकारात्मक सोच को बदलने एवं बेटियों को बचाने,बेटियों को पढ़ाने एवं आगे बढ़ाने में सेतु का कार्य करेगा।इसके साथ ही इस जागरूकता रथ में लगी एलईडी के माध्यम से मतदान के प्रति भी लोगों को जागरूक किया जायेगा।इस अभियान के माध्यम से बालिकाओं को शासन की योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए इनके प्रावधानों की जानकारी भी ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचेगी।इस दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यक्रम अधिकारी अशोक कुमार पाण्डेय सहित विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री आवास योजना की समीक्षा बैठक संपन्न

सुकमा(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव ने आज जिला पंचायत के सभाकक्ष में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की समीक्षा बैठक का आयोजन किया। बैठक में आवास के नोडल अधिकारियों, जनपद सीईओ, एसडीएम, तहसीलदार, तकनीकी सहायक, और अन्य संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति थे। कलेक्टर श्री ध्रुव ने बैठक के दौरान कहा कि पूर्व में किए गए प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं और सभी नोडल अधिकारियों के सहयोग से स्वीकृत सभी आवास निर्माण में प्रगति होगी। उन्होंने निर्देश दिया कि आवास निर्माण कार्य का नियमित निरीक्षण करते रहें और गुणवत्तापूर्ण निर्माण सुनिश्चित करें। इसके अलावा, आवास निर्माण में आवश्यक सामग्रियों की समय पर उपलब्धता के लिए सभी सम्बंधित व्यक्तियों से समन्वय बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया।उन्होंने यह भी कहा कि निर्माण कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए संबंधित राजमिस्त्रियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाए और इच्छुक राजमिस्त्रियों को ऋण की सुविधा उपलब्ध कराई जाए ताकि निर्माण कार्य तेजी से हो सके। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्वीकृत आवास कार्यों को पुरा करने के दिशा में प्राथमिकता के साथ काम करें और सुनिश्चित करें कि सभी निर्माण कार्य समय पर पूरे हों। सीईओ जिला पंचायत श्रीमती नम्रता जैन ने बताया कि जिले में 4500 से अधिक लाभार्थियों को योजना के तहत प्रथम किस्त जारी की जा चुकी है। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण निर्माण सुनिश्चित करने और ग्रामवार आवास मेला आयोजित करने के निर्देश दिए, ताकि सभी हितग्राहियों को आवास योजना का समय में पूरा लाभ मिल सके।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का आयोजन

सुकमा(विश्व परिवार)। आज देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा, महाराष्ट्र से किसानों को डीबीटी के माध्यम से पी.एम. किसान सम्मान निधि की 18वी. किश्त की राशि 9.4 करोड़ लाभार्थी किसानों के खाते में कुल राशि करीब 20 हजार करोड़ रूपए का स्थानान्तरण किया। सुकमा जिले के लगभग 19,931 लाभार्थी किसानों के खाते में करीब 4.65 करोड़ की राशि का स्थानांतरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान माननीय प्रधानमंत्री जी ने कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र से जुडी कई परियोजनाओं का शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कृषि विज्ञान केंद्र सुकमा में किया गया। गौरतलब है कि पी.एम किसान सम्मान निधि योजना अंतर्गत हर साल किसानों को 03 किश्त जारी की जाती हैं जिसमें पहली किश्त अप्रैल से जुलाई, द्वितीय किश्त अगस्त से नवम्बर एवं तृतीय किश्त दिसम्बर से मार्च माह के मध्य जारी की जाती हैं। हर एक किश्त में करीब 2000 रु. किसानों के खाते में हस्तांतरित किये जाते हैं। कार्यक्रम के अंत में कृषि एवं मत्स्य विभाग द्वारा विभागीय योजनाओ की जानकारी कृषकों को दी साथ ही कृषकों के समस्याओं के समाधान के लिए कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम श्रीमती रामबती नाग, सरपंच ग्राम पंचायत मुरतोण्डा के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में श्री पी आर बघेल, उप संचालक कृषि, कृषि विज्ञान केन्द्र, सुकमा से श्री राजेंद्र प्रसाद कश्यप, विशेषज्ञ, पादप रोग, डॉ. परमानंद साहू, विशेषज्ञ, कृषि मशीनरी एवं डॉ. संजय सिंग राठौर, कार्यक्रम सहायक, तथा कृषि विभाग से श्री सुरेश बेक, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, श्री एल एन बघेल, श्रीमती ज्योति गावड़े व अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

त्याग तपस्या दानशीलता पहचान है साहू समाज की : सांसद

साहू समाज रूढ़िवादीता को पीछे छोड़, नई ऊर्जा से निरन्तर आगे बढ़ रही है : रंजना साहू

धमतरी(विश्व परिवार)। धमतरी शहर के हाटकेश्वर वार्ड में पूर्व विधायक रंजना डीपेंद्र साहू के निधि से स्वीकृत साहू समाज भवन का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासमुंद लोकसभा क्षेत्र सांसद रूपकुमारी चौधरी, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक रंजना साहू के आतिथ्य में पूजा अर्चना व फीता काट कर किया गया। सर्वप्रथम सभी अतिथियों व समाजजनों के द्वारा साहू समाज की आराध्य देवी भक्त मां कर्मा की पूजा अर्चना की गई। आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ एवं तिलक लगाकर साहू समाज द्वारा किया गया। अतिथि उद्बोधन में सांसद श्रीमती चौधरी ने कहा कि साहू समाज में अनेक बदलाव आए हैं, सामुहिक विवाह को प्रोत्साहित करना, विधवाओं का पुनर्विवाह को बढ़ावा देना, सामाजिक कुरीतियों को रोकना, स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में सहयोग देने जैसे अनेक बदलाव है, इस बदलाव से साहू समाज अन्य समाजों के लिए प्रेरणा बन रही है, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक विचारधारा में निरंतर बदलाव आ रही है और इसमें साहू समाज का योगदान जो की त्याग तपस्या दानशीलता का पर्याय है, यह पहचान दिखाती है कि साहू समाज की एकता और संगठन क्षमता निरंतर बढ़ रही है। पूर्व विधायक रंजना साहू ने कहा कि साहू समाज का इतिहास अति गौरवशाली रहा है देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर स्वतंत्रता उपरांत भी देश के विकास, निर्माण एवं नईदिशा देने में साहू समाज का सराहनीय योगदान रहा है। समाज को आगे बढ़ाने एवं उसके चौमुखी विकास के लिए निरंतर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना हम सब का नैतिक दायित्व है।श्रीमती साहू ने आगे कहां कि समाज को आगे बढ़ाने में नवयुवकों का योगदान सराहनी एवं अग्रणी रहा है, क्योंकि कोई भी क्रांति बिना युवा नेतृत्व के बिना सफ्ल नहीं होती, इसलिए युवाओं का योगदान समाज में नया जोश लाने नेतृत्व में जुझारूपन, कर्मठता, संपन्नता, विकासशील विचारों वाला भाव प्रकट करता है। साहू समाज जिला अध्यक्ष अवनेंद्र साहू ने पूर्व विधायक रंजना साहू का भवन निर्माण में योगदान के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए समस्त समाज जनों को बधाई दिए। इस अवसर पर मुख्य रूप से विजय साहू, यशवंत साहू, उमेश साहू, लखन पटेल, अखिलेश सोनकर, गौतम ध्रुव, महेश साहू, गोपी किशन साहू, लक्ष्मण साहू, नीलमणि साहू, राजेंद्र साहू, पितांबर साहू, रामदयाल साहू, कुलेश्वरी साहू, जनक साहू, कंयारी साहू, मुकेश साहू, भूषण साहू, देवेंद्र साहू सहित बड़ी संख्या में सामाजिक बंधुजन उपस्थित रहे।

राजस्व प्रकरणों का तेजी से करें निराकरण - कलेक्टर

कलेक्टर ने राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक में दिये निर्देश

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में राजस्व विभाग के अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली।उन्होंने अविवादित नामांतरण,बंटवारा, सीमांकन,राजस्व वसूली,नक्शा बटांकन,अभिलेखों की शुद्धता,डायवर्सन आदि राजस्व प्रकरणों की अनुविभागवार गहन समीक्षा की। कलेक्टर ने लोगों की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए लंबित राजस्व प्रकरणों को समय-सीमा के भीतर निराकरण करने के निर्देश दिये है।उन्होंने प्रकरण निराकरण पश्चात उसका अभिलेख दुरुस्तीकरण भी तय सीमा में सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।कलेक्टर ने स्कूली एवं कॉलेज विद्यार्थियों के आय, जाति,निवास प्रमाण पत्र निर्माण में तेजी लाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि छुटे हुए बच्चों के प्रमाण पत्र बनाने के लिए विशेष शिविरों का आयोजन किया जाए। कलेक्टर ने आरबीसी 6-4 एवं फसल क्षति के प्रकरणों पर कार्ययोजना बनाकर मुआवजा प्रकरणों का गंभीरतापूर्वक निराकरण करने के निर्देश दिये। उन्होंने जिले में खनिजों के अवैध उत्खनन एवं परिवहन पर सख्त कार्यवाही करने के निर्देश अधिकारियों को दिये। कलेक्टर ने स्वामित्व योजना के तहत शासन के निर्देशानुसार सभी कार्यो को 31 अक्टूबर तक पूर्ण करने के निर्देश दिये।इस दौरान सभी एसडीएम,तहसीलदार, नायब तहसीलदार एवं अन्य राजस्व अधिकारी मौजूद रहे।कलेक्टर ने सभी अनुविभागीय अधिकारियों से उनके क्षेत्र अंतर्गत पंजीकृत राजस्व प्रकरणों की विस्तृत जानकारी ली।साथ ही लंबे समय से दर्ज प्रकरणों के निराकरण के लिए आवश्यक मार्गदर्शन भी दिये। उन्होंने कहा कि राजस्व न्यायालयों में दर्ज प्रकरण समय-सीमा के बाहर नहीं जाना चाहिए।उनका निराकरण तय सीमा के अंतर्गत हो जाना चाहिए।कलेक्टर ने शासन के मंशानुसार लोगों को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए सक्रियता के साथ गंभीरतापूर्वक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के निर्देश राजस्व अधिकारियों को दिये।कलेक्टर ने वन अधिकार पट्टों का डिजिटाइजेशन,अभिलेख कोष्ठ में अभिलेख जमा करने की स्थिति,मसाहती,असर्वेक्षित ग्रामों का सर्वेक्षण, शासकीय उचित मूल्य दुकान,स्कूल,आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण,पटवारी,राजस्व निरीक्षकों की बैठक लोकसेवा केन्द्र के अंतर्गत लंबित आवेदनों की जानकारी,लंबी अवधि तक अनुपस्थित रहने वाले कर्मचारियों पर कार्यवाही एवं लंबित अनुकंपा नियुक्ति के सबंध में जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिये। कलेक्टर ने बैठक में अनुविभागीय अधिकारियों, तहसीलदार एवं नायब तहसीलदारों से उनके न्यायालयों में लंबित राजस्व प्रकरणों के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी ली।इसके अलावा उन्होंने भू-अर्जन के लंबित प्रकरणों एवं मुआवजा भुगतान,राजस्व पुस्तक परिपत्र 6-4 के प्रकरणों का भी त्वरित निराकरण करने निर्देश दिए।उन्होंने जनशिकायत,जनदर्शन,जनचौपाल इत्यादि प्रकरणों को अभियान चलाकर जल्द ही निराकृत करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये।

सभी नोडल अधिकारियों के सहयोग से आवास निर्माण में होगी प्रगति : कलेक्टर

सुकमा(विश्व परिवार)। कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव ने आज जिला पंचायत के सभाकक्ष में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की समीक्षा बैठक का आयोजन किया। बैठक में आवास के नोडल अधिकारियों, जनपद सीईओ, एसडीएम, तहसीलदार, तकनीकी सहायक, और अन्य संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति थे। कलेक्टर ध्रुव ने बैठक के दौरान कहा कि पूर्व में किए गए प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं और सभी नोडल अधिकारियों के सहयोग से स्वीकृत सभी आवास निर्माण में प्रगति होगी। उन्होंने निर्देश दिया कि आवास निर्माण कार्य का नियमित निरीक्षण करते रहें और गुणवत्तापूर्ण निर्माण सुनिश्चित करें। इसके अलावा, आवास निर्माण में आवश्यक सामग्रियों की समय पर उपलब्धता के लिए सभी सम्बंधित व्यक्तियों से समन्वय बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया।उन्होंने यह भी कहा कि निर्माण कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए संबंधित राजमिस्त्रियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाए और इच्छुक राजमिस्त्रियों को ऋण की सुविधा उपलब्ध कराई जाए ताकि निर्माण कार्य तेजी से हो सके। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्वीकृत आवास कार्यों को पुरा करने के दिशा में प्राथमिकता के साथ काम करें और सुनिश्चित करें कि सभी निर्माण कार्य समय पर पूरे हों। सीईओ जिला पंचायत नम्रता जैन ने बताया कि जिले में 4500 से अधिक लाभार्थियों को योजना के तहत प्रथम किस्त जारी की जा चुकी है।

जल जगार महोत्सव में बहुरूपया और अनुज शर्मा की रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम ने बांधा समां

अनुज शर्मा के छत्तीसगढ़ी गीते पर दर्शक देर रात तक झूमते नजर आये

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले में दो दिवसीय जल जगार महोत्सव का बीते दिन समापन हुआ। समापन अवसर पर इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय (खैरागढ़) और स्थानीय छात्रों द्वारा विशेष रूप से क्यूरेट किया गया। प्रदर्शन जल सरंक्षण की थीम पर किया गया है। इसके साथ ही प्रसिद्ध कलाकार पद्मश्री अनुज शर्मा ने अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से दर्शकों का मन मोह लिया। अनुज शर्मा ने अपनी टीम के साथ मिलकर रंग-बिरंगे परिधानों में स्थानीय नृत्य प्रस्तुत किए। जिसमें छत्तीसगढ़ी गीत, भजन आदि की प्रस्तुति में दर्शक देर रात तक झूमते नजर आये। उनकी कला में जल संरक्षण का संदेश बेहद प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया, इसमें नृत्य के साथ-साथ गाने शामिल थे। उन्होंने बताया कि पानी न केवल जीवन के लिए आवश्यक है, बल्कि यह हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनके कार्यक्रम में जल की उपयोगिता, संरक्षण और बचत के तरीकों पर विभिन्न प्रदर्शन किए गए। दर्शकों ने कार्यक्रम के दौरान नृत्य और संगीत का आनंद लिया। खासतौर पर बच्चों के लिए विशेष आकर्षण के रूप में जल के महत्व को समझाने के लिए खेल और प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। अनुज शर्मा ने बच्चों को जल बचाने के विभिन्न तरीकों के बारे में बताते हुए उन्हें जागरूक किया। यह भागीदारी बच्चों के लिए एक अद्भुत अनुभव बनी। कार्यक्रम के दौरान अनुज ने दर्शकों से भी संवाद किया, जिसमें उन्होंने जल के संरक्षण में सभी की जिम्मेदारी को रेखांकित किया।

जिला रेड क्रॉस सोसाइटी की साधारण सभा की बैठक में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने पर विशेष जोर

मोहला(विश्व परिवार)। जिला रेड क्रॉस सोसाइटी की साधारण सभा की बैठक कलेक्टर एस. जयवर्धन की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभा कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में विभिन्न महत्वपूर्ण सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। बैठक में जिले के प्रमुख अधिकारी और सोसाइटी के सदस्य उपस्थित थे। बैठक में मुख्य रूप से तीनों सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में ब्लड स्टोरेज यूनिट स्थापित करने का प्रस्ताव रखा गया। यह निर्णय क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से लिया गया है, ताकि रक्त की आवश्यकता के समय बेहतर सुविधाएं मुहैया कराई जा सकें। रेड क्रॉस मोबाइल मेडिकल यूनिट के लिए आवश्यक मानव संसाधन की व्यवस्था पर भी बैठक में गहन चर्चा की गई। इसके लिए डीएमएफ (जिला खनिज निधि) और साडा (विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण) से प्रस्ताव भेजने का निर्णय लिया गया, ताकि मोबाइल यूनिट के लिए जरूरी स्टाफ और अन्य व्यवस्थाओं को समय पर सुनिश्चित किया जा सके। बैठक में स्वास्थ्य शिविरों के महत्व पर भी जोर दिया गया। स्वास्थ्य सेवाओं को जन-जन तक पहुँचाने और सामुदायिक स्वास्थ्य के स्तर को सुधारने के लिए नियमित रूप से स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन आवश्यक माना गया है। इसके लिए रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा शिविरों के आयोजन की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्यता अभियान को और अधिक व्यापक बनाने पर भी विचार-विमर्श किया गया। इस अभियान के तहत अधिक से अधिक लोगों को सोसाइटी से जोडने और समाज सेवा के कार्यों में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न योजनाओं पर चर्चा की गई। रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्यता अभियान का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के लोग रेड क्रॉस सोसाइटी से जुड़कर मानव सेवा के कार्यों में योगदान दें।

डॉक्टर मरीजों के लिए देवता के समान : रूपसाय सलाम

निःशुल्क मेगा चिकित्सा शिविर में 1819 मरीजों का किया गया निःशुल्क उपचार

नारायणपुर(विश्व परिवार)। बालक हायर सेकेंडरी विद्यालय में दो दिवसीय निःशुल्क मेगा चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसका समापन सर्व आदिवासी समाज के संरक्षक रूपसाय सलाम के मुख्य आत्थि में किया गया। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि डॉक्टर मरीजों के लिए देवता के समान हैं, जो मरीजों को रोग से निजाद दिलाते हैं। उन्होंने मंशा जाहिर करते हुए कहा कि भविष्य में जिले के अबुझमाड़ क्षेत्र ओरछा और सोनपुर में मेगा चिकित्सा शिविर लगाकर उपचार कराने की अपील जिला प्रशासन से की है। उन्होंने चिकित्सों की कार्य को सराहना करते हुए कहा कि अबुझमाड़ क्षेत्र में आकर मरीजों का इलाज कर उनकी रोग से बचाव करने का कार्य किये हैं जो अमुल्य योगदान है। कार्यक्रम

को कलेक्टर बिपिन मांझी ने संबोधित करते हुए कहा कि अंबेडकर चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर के विशेषज्ञ चिकित्सों के द्वारा दो दिवसीय शिविर में अबुझमाड़ क्षेत्र के ग्रामीणों को निःशुल्क उपचार कर रोग से बचाव हेतु सराहनीय कार्य किया गया, जिसके लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। भविष्य में शिविर की आवश्यकता पड़ने पर आप लोगों की सेवा की पुनः जरूरत पड़ेगी। उन्होंने सभी चिकित्सों को दो दिवसीय इलाज में सहयोग करने के लिए जिला प्रशासन की ओर से आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी चिकित्सकों को दो दिवसीय शिविर में सहयोग देने के लिए जिला प्रशासन की ओर से स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र मुख्य अतिथि के हाथों प्रदान किया गया। जिला चिकित्सालय के डॉक्टरों के द्वारा भी मरीजों का उपचार करने में सहयोग करने के लिए उन्हें भी स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र प्रदान सम्मानित किया गया। मेगा चिकित्सा शिविर में चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. के.के. साहू, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. दीपक अग्रवाल, डेंटल रोग विशेषज्ञ डॉ. मनीष गुप्ता एवं डॉ. जितेंद्र सर्राफ, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद भीमसरिया, आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. श्रीनिवास एवं डॉ. प्रशांत रावत, होम्योपैथी विशेषज्ञ डॉ. संध्या एवं डॉ चंदन अग्रवाल, दर्द एवं उष्माशक विशेषज्ञ डॉ. बबलेश महावर एवं डॉ. आशीष सिन्हा और रेडियोलॉजिस्ट डॉ. आनंद बंसल तथा डॉ. संतोष भारद्वाज द्वारा पंजीयन करये मरीजों का उपचार किया गया। हड्डी रोग के 122, नेत्र रोग के 232, किडनी समस्या के एक, लिवर समस्या के 02, दंत एवं मुख रोग के 62, चर्म रोग के 63, कान नाक एवं गला रोग के 65, हृदय रोग के 30, स्त्री रोग के 15, शिशु रोग के 47, न्यूरोलॉजी रोग के 16, मानसिक रोग के 46 और सर्दी खासी और बुखार के 1118 के मरीजों का निःशुल्क इलाज किया गया। समाज कल्याण विभाग द्वारा निःशुल्क मेगा चिकित्सा शिविर में 08 दिव्यांग एवं वृद्धजनों को छड़ी वितरण किया गया। कार्यक्रम को बृजमोहन देवांगन, अपर कलेक्टर बिरेन्द्र बहादुर पंचभाई, डॉ. आशीष सिन्हा, डॉ. केके साहू द्वारा संबोधित किया गया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर बुधवार 09 अक्टूबर 2024

व्यापार समाचार

एमेजॉन इंडिया ने डिलीवरी एसोसिएट्स के लिए विस्तृत सुरक्षा और कल्याण कार्यक्रम लांच किया

रायपुर। एमेजॉन इंडिया ने डिलीवरी एसोसिएट्स की बेहतरी पर जोर देते हुए डायल 4242 के साथ साझेदारी कर एम्बुलेंस सेवाओं को शुरू किया हैं। इसका उद्देश्य सुरक्षा के उपायों को बढ़ाना और डिलीवरी एसोसिएट्स के स्वास्थ्य को अहमियत देना है। इतना ही नहीं एमेजॉन ने बड़े पैमाने पर एक स्वास्थ्य अभियान भी शुरू किया है, जो लगभग 6 महीनों तक चलेगा। इससे उनके डिलीवरी सर्विस पार्टनर और उनके डिलीवरी एसोसिएट्स, साथ ही आई हैव स्पेस और फ्लेक्स कार्यक्रमों के 50,000 से भी ज्यादा एसोसिएट्स को लाभ मिलेगा। इस अभियान के तहत डिलीवरी एसोसिएट्स को मुफ्त स्वास्थ्य जांच सुविधा मिलेगी जिसमें आंखों और दांतों की जांच शामिल है, साथ ही उनमें मौजूदा स्वास्थ्य और दुर्घटना कवरेज के बारे में जागरूकता बढ़ाने का भी काम किया जाएगा, जिसमें महिला डिलीवरी एसोसिएट्स के लिए मातृत्व कवर को भी शामिल किया गया है। इन मजबूत प्रयासों से एमेजॉन की यह प्रतिबद्धता साफ झलकती है कि वह अपने डिलीवरी एसोसिएट्स को एक सुरक्षित और सहायक माहौल देना चाहते हैं। सभी जरूरी चिकित्सा सेवाओं को सुनिश्चित करके और समग्र भलाई को अहमियत देकर, एमेजॉन डिलीवरी एसोसिएट्स को सशक्त और सुरक्षित रखने के प्रति उनके दृढ़ संकल्प को उजागर करता है। डिलीवरी एसोसिएट्स की भलाई हेतु अपनी प्रतिबद्धता के मद्दे नज़र एम्बुलेंस सेवाओं को कुछ ऐसे डिज़ाइन किया गया है जिससे सड़क पर आवागमन के दौरान डिलीवरी एसोसिएट्स सुरीक्षित और निश्चिंत महसूस करें। यह सेवा आपातकाल के समय के दौरान तुरंत चिकित्सा तक पहुंचाएगी।

जेके पेपर ने बिलासपुर में जेके कनेक्ट प्रोग्राम से अपनी ट्रेड पार्टनरशिप को मजबूत किया

बिलासपुर। भारतीय पेपर उद्योग में अग्रणी जेके पेपर लिमिटेड ने अपने चल रहे जेके कनेक्ट पहल में बिलासपुर में जॉबर्स और रिटेलर्स मीट का सफ्लतापूर्वक आयोजन किया। इस आयोजन में 80 से अधिक लोकल रिटेलर्स ने भाग लिया, जिससे वितरकों, जॉबर्स और प्रमुख हितधारकों के साथ जुड़ने का एक मंच मिला। मौके पर त्रिलोचन सिंह, आरएसएम रिटेल सेल्स, जेके पेपर लिमिटेड और रोशन स्टेशनर्स की श्रीमती मनीषा राजेश अग्रवाल सहित अन्य लोगों ने अपने विचार रखे। जेके पेपर की यह बैठक कंपनी के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलों और कंपनी के दृष्टिकोण को दिखाने के साथ-साथ पर्यावरण के हित में कागज की खपत के महत्व को बताने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। जेके पेपर का बिलासपुर के 150 एमटी बाजार में 50 प्रतिशत बाजार हिस्सा है, जिसमें चैनल पार्टनर रोशन स्टेशनर्स समय पर ऑर्डर पूरा करने और कस्टमर सर्विस में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। त्रिलोचन सिंह, आरएसएम रिटेल सेल्स, जेके पेपर लिमिटेड, ने बताया कि जेके कनेक्ट एक सामान्य कस्टमर मीट से आगे बढ़ता है, पर्यावरण के हित में और रिसाइकिल्ड पेपर प्रोडक्ट के गिल्ट फ्री कंसम्पशन के बारे में शिक्षित करके कागज़ मिलों और अंतिम उपभोक्ता के बीच की खाई को पाटता है। रोशन स्टेशनर्स की श्रीमती मनीषा राजेश अग्रवाल ने कहा, इस कार्यक्रम ने हमें यह समझने में मदद की कि प्लास्टिक की तुलना में कागज पर्यावरण के लिए कैसे सुरक्षित है, और हम ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन के लिए जेके पेपर की सराहना करते हैं जो इकोलॉजिकल पेपर प्रोडक्शन के महत्व को सामने लेकर आते हैं।

Oppo India अपने नए ब्रांड कैम्पेन #VishwasKaDeep के साथ दीवाली मना रहा है

नई दिल्ली: इस दीवाली पर OPPO India अपना नया ब्रांड कैम्पेन #VishwasKaDeep लेकर आया है। इस कैम्पेन में एक आकर्षक फिल्म और अनेक डिजिटल अनुभव पूरे भारत से दीवाली के जश्न की तस्वीरें पेश कर रहे हैं, जिनमें विविधता में एकता दिखाई दे रही है। इसके साथ ही संदेश ''हर दीवाली विश्वास का दीप जलाती है'' आशा एवं विश्वास प्रदर्शित कर रहा है, जो त्योहारों पर सभी लोगों और समुदायों को एक सूत्र में बांधता है। यह हृदयस्पर्शी एड फिल्म OPPO India के यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स और सिनेमा हॉल्स में चल रही है, जो दर्शकों को विभिन्न क्षेत्रों की जीवंत यात्रा पर ले जा रही है। फिल्म की शुरुआत रेतीले रेगिस्तान से होती है, जहाँ एक व्यक्ति रेतीले तूफान से होते हुए अपने घर जोधपुर जा रहा है। वह अपनी माँ के द्वारा छत पर जलाए गए दीवाली के दिए को देखकर दिशा प्राप्त करता है। इस फिल्म द्वारा 'थार की दीवाली' का सार पेश किया गया है, जिसका आकर्षण यहाँ की लोकप्रिय कठपुतली की कला बढ़ाती है।

सोलरवर्ल्ड एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड ने 600 करोड़ रुपये तक के आईपीओ के लिए सेबी के समक्ष दाखिल किया डीआरएचपी

रायपुर। सोलरवर्ल्ड एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। कंपनी ने 6000 मिलियन [600 करोड़] तक के आरंभिक सार्वजनिक निर्गमों के माध्यम से इक्विटी शेयरों (प्रत्येक का अंकित मूल्य 5) की पेशकश के जरिये धन जुटाने की योजना बनाई है। क्रिसिल के रिपोर्ट अनुसार सोलरवर्ल्ड एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड वित्त वर्ष 2024 के लिए ईपीसी व्यवसाय से राजस्व के मामले में सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (ईपीसी) सेवाओं में विशेषज्ञता रखने वाली अग्रणी सौर ऊर्जा समाधान प्रदाता कंपनियों में से एक है। इस ऑफर में ?5500 मिलियन [?50 करोड़] तक के इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू (''नया इश्यू'') और विक्रय शेयरधारकों द्वारा 500 मिलियन [50 करोड़] तक ऑफर फॉर सेल शामिल है। (''बिक्री के लिए ऑफर'')।

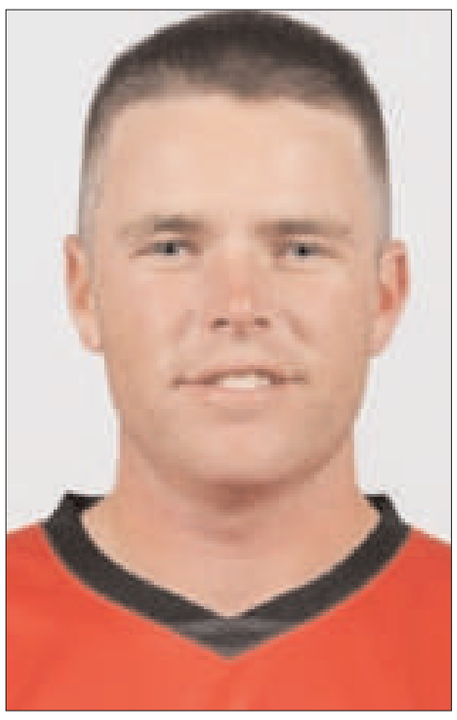

टेस्ट सिलेक्शन में निराशा के बाद मार्कस हैरिस नई चुनौतियों के लिए तैयार

नई दिल्ली(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम में जगह बनाने से चूकने के बाद मार्कस हैरिस ने नए सिरे से फोकस और नई मानसिकता के साथ 2024-25 शेफील्ड शील्ड सीजन पर अपना ध्यान केंद्रित कर लिया है। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट खिलाड़ी मार्कस हैरिस ने घरेलू सत्र से पहले क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू से कहा, इस साल मेरे लिए यही अंतर है कि पिछले साल की तरह इस साल मेरे सिर पर टेस्ट में चयन होने का खतरा नहीं मंडरा रहा है। उन्होंने कहा, मैं जानता हूं कि मैं कहां खड़ा हूं और मैं जिस स्थिति में हूं, मेरी उम्र क्या है, मुझे पता है कि अगर मुझे फिर से मौका मिलना है तो मुझे हर हाल में दरवाजा खटखटाना होगा। ऐसा लगता है कि वे छह बल्लेबाजों के बारे में काफी हद तक तय कर चुके हैं। लेकिन वे वास्तव में निश्चित नहीं हैं कि क्रम क्या होगा। 32 वर्षीय सलामी बल्लेबाज को कभी डेविड वार्नर के संभावित रिप्लेसमेंट के रूप में देखा जा रहा था। हालांकि पिछली गर्मियों में चयनकर्ताओं ने बल्लेबाजी ऑर्डर के साथ प्रयोग किया और तब हैरिस दरकिनार कर दिए गए। हैरिस और उनके प्रतिद्वंद्वियों कैमरन बैनक्रॉफ्ट और मैथ्यू रेनशॉ के स्थान पर स्टीव स्मिथ को पारी की शुरुआत करने के लिए उतारा गया। टेस्ट टीम में सिलेक्शन से चूकने की निराशा पर हैरिस ने स्वीकार किया कि उनके लिए अपने टेस्ट भविष्य की अनिश्चितता से बचना मुश्किल था, लेकिन इसके साथ आने वाली मानसिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए उन्होंने कदम उठाए हैं। पिता बनने से हैरिस को एक नया दृष्टिकोण भी मिला है। 2023-24 सीजन की शुरुआत से कुछ दिन पहले अपने बेटे मैक्स का स्वागत करते हुए, हैरिस ने घर पर पर्सनल लाइफ के साथ क्रिकेट को संतुलित करने की चुनौतियों को स्वीकार किया। उन्होंने कहा जब आपके पास एक छोटा बच्चा होता है, तो चीजें इस क्रम में बदल जाती हैं कि क्या ज्यादा महत्वपूर्ण है और क्या नहीं। वह अब एक साल का हो गया है, इसलिए मैं यह नहीं कहूंगा कि यह आसान हो रहा है, लेकिन मैं एक पिता होने के लिए और अधिक अभ्यस्त हो रहा हूं।

एमेजॉन इंडिया ने डिलीवरी एसोसिएट्स के लिए विस्तृत सुरक्षा और कल्याण कार्यक्रम लांच किया

रायपुर। एमेजॉन इंडिया ने डिलीवरी एसोसिएट्स की बेहतरी पर जोर देते हुए डायल 4242 के साथ साझेदारी कर एम्बुलेंस सेवाओं को शुरू किया हैं। इसका उद्देश्य सुरक्षा के उपायों को बढ़ाना और डिलीवरी एसोसिएट्स के स्वास्थ्य को अहमियत देना है। इतना ही नहीं एमेजॉन ने बड़े पैमाने पर एक स्वास्थ्य अभियान भी शुरू किया है, जो लगभग 6 महीनों तक चलेगा। इससे उनके डिलीवरी सर्विस पार्टनर और उनके डिलीवरी एसोसिएट्स, साथ ही आई हैव स्पेस और फ्लेक्स कार्यक्रमों के 50,000 से भी ज्यादा एसोसिएट्स को लाभ मिलेगा। इस अभियान के तहत डिलीवरी एसोसिएट्स को मुफ्त स्वास्थ्य जांच सुविधा मिलेगी जिसमें आंखों और दांतों की जांच शामिल है, साथ ही उनमें मौजूदा स्वास्थ्य और दुर्घटना कवरेज के बारे में जागरूकता बढ़ाने का भी काम किया जाएगा, जिसमें महिला डिलीवरी एसोसिएट्स के लिए मातृत्व कवर को भी शामिल किया गया है। इन मजबूत प्रयासों से एमेजॉन की यह प्रतिबद्धता साफझलकती है कि वह अपने डिलीवरी एसोसिएट्स को एक सुरक्षित और सहायक माहौल देना चाहते हैं। सभी जरूरी चिकित्सा सेवाओं को सुनिश्चित करके और समग्र भलाई को अहमियत देकर, एमेजॉन डिलीवरी एसोसिएट्स को सशक्त और सुरक्षित रखने के प्रति उनके दृढ़ संकल्प को उजागर करता है। डिलीवरी एसोसिएट्स की भलाई हेतु अपनी प्रतिबद्धता के मद्दे नज़र एम्बुलेंस सेवाओं को कुछ ऐसे डिज़ाइन किया गया है जिससे सड़क पर आवागमन के दौरान डिलीवरी एसोसिएट्स सुरीक्षित और निश्चिंत महसूस करें। यह सेवा आपातकाल के समय के दौरान तुरंत चिकित्सा तक पहुंचाएगी। साथ ही यह सड़क पर दुर्घटना के बाद पहले कुछ क्रिटिकल घंटों के दौरान समय पर सहायता देने का वादा करती है। यह सुविधा डायल 4242 के पैन इंडिया नेटवर्क पर उपलब्ध होगी। साथ ही, हाल ही में लॉन्च किया गया।

श्रीलंका क्रिकेट ने सनथ जयसूर्या को बनाया पुरुष टीम का हेड कोच

कोलंबो(एजेंसी)। पूर्व कप्तान सनथ जयसूर्या को श्रीलंका पुरुष क्रिकेट टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। श्रीलंका के पूर्व ओपनर रह चुके जयसूर्या के मार्गदर्शन में टीम ने खासकर भारत, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया था। जयसूर्या की नियुक्ति 1 अक्टूबर 2024 से शुरू हो गई है और वह 31 मार्च 2026 तक इस पद पर रहेंगे। श्रीलंका क्रिकेट के बयान के अनुसार, श्रीलंका क्रिकेट की कार्यकारी समिति ने यह निर्णय हाल के भारत, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड दौरे पर टीम के अच्छे प्रदर्शन को देखते हुए लिया, जहां जयसूर्या अंतरिम मुख्य कोच के रूप में टीम के साथ थे। मुख्य कोच के रूप में जयसूर्या

की पहली जिम्मेदारी वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाले सीमित ओवरों के मैच होंगे, जो दांबुला और पल्लेकेले में खेले जाएंगे। जयसूर्या पहले श्रीलंका क्रिकेट के सलाहकार रह चुके हैं। उनको पहली बार जुलाई में अंतरिम मुख्य कोच नियुक्त किया गया था। पिछले कुछ महीनों में जयसूर्या की देखरेख में, श्रीलंका ने 27 साल बाद भारत के खिलाफ पहली द्विपक्षीय वनडे सीरीज जीती, 10 साल में पहली बार इंग्लैंड को उनकी धरती पर टेस्ट मैच में हराया, और हाल ही में न्यूजीलैंड को घरेलू टेस्ट में 2-0 से हराया। 1991 से 2007 तक जयसूर्या ने 110 टेस्ट मैच खेले, जिसमें उन्होंने 40.07 की औसत से 6973 रन बनाए, जिसमें 14 शतक और 31 अर्धशतक शामिल हैं। 445 वनडे मैचों में उन्होंने 13,430 रन बनाए, 32.36 की औसत से 28 शतक और 68 अर्धशतक लगाए। 1996 के विश्व कप में उन्होंने श्रीलंका की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। जयसूर्या इसके अलावा एक शानदार गेंदबाज भी थे।

एथेनॉल निर्माताओं की लिवाली से मक्का में उछाल

जयपुर(एजेंसी)। एथेनॉल बनाने वाली कंपनियों की मांग निकलने से इन दिनों मक्का की कीमतें तेज बोली जा रही हैं। बिहार की हरियाणा डिलीवरी मक्का के भाव वर्तमान में 2780 रुपए प्रति क्विंटल चल रहे हैं। मक्की के भावों में आए उछाल को लेकर जानकारों का कहना है कि पौल्ट्री व्यवसाय की बढ़ती मांग और एथेनॉल बनाने में मक्का के उपयोग के कारण इसकी कीमतों में तेजी आई है। यही कारण है कि वर्तमान में मक्का के भाव एमएसपी से काफी ऊंचे चल रहे हैं। वर्ष 2023-24 के लिए सरकार ने मक्के का एमएसपी 2090 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया हुआ है। भीलवाड़ा से ब्रोकर संजय अजमेरा ने बताया कि उत्तर प्रदेश की हरियाणा डिलीवरी मक्का के भाव 2660 रुपए प्रति क्विंटल में व्यापार हो रहा है। इस बीच राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की नई मक्का भी शुरू हो गई है। महाराष्ट्र एवं गुजरात में नई मक्का की आवक हो रही है। लिहाजा मक्का की कीमतों में अब लंबी तेजी के आसार समाप्त हो गए हैं। वर्ष 2022 में मक्का के भाव 1200 रुपए प्रति क्विंटल के आसपास थे, जबकि वर्तमान में मक्का 2600 रुपए प्रति क्विंटल से ऊपर बिक रही है। जानकार बताते हैं कि मक्की का उपयोग कपड़ा, स्टार्च, कुक्कुट समेत अन्य उद्योगों में लगातार बढ़ता जा रहा है। जहां एक ओर मक्के का दाम बढ़ने से किसान खुश हैं, वहीं मक्का की सप्लाई कम होने से पॉल्ट्री (मुर्गी पालन) उद्योग और स्टार्च कंपनियों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। पॉल्ट्री उद्योग और स्टार्च निर्माताओं ने सरकार से मक्के की उपलब्धता बढ़ाने के उपाय करने की मांग की है। जानकारों का कहना है कि देश में मक्का के दाने और मक्का की खली का उपयोग दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। मक्के का जहां पॉल्ट्री क्षेत्र में ज्यादा उपयोग होता है, वहीं मक्का की खली को दुधारू पशुओं के लिए उपयोगी माना जाता है।

मेगा ब्लॉकबस्टर सेल 2024 के लिए मीशो को छत्तीसगढ़ में उपयोगकर्ताओं की संख्या में 40% की वृद्धि हुई

रायपुर: भारत के एकमात्र ट्रू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस मीशो ने अत्यधिक अपेक्षित मीशो मेगा ब्लॉकबस्टर सेल 27 सितंबर से 6 अक्टूबर, 2024 तक चलने वाली 'मीशो मेगा ब्लॉकबस्टर सेल 2024' के दौरान शानदार फेस्टिव सेल देखी।। कंपनी ने इस साल मांग में प्रभावशाली वृद्धि देखी, पिछले साल की तुलना में कुल ऑर्डर 40त्न से अधिक बढ़े। इसके अलावा सेल अवधि के दौरान 3 करोड़ से अधिक ऐप डाउनलोड किए गए। छत्तीसगढ़ में खरीदारों द्वारा पसंद किए जाने वाले शीर्ष उत्पाद ब्लूटूथ हेडफ़ोन और ईयरफ़ोन, लहंगा चोली, स्मार्ट घड़ियाँ, पूजा के सामान, एक्सटेंशन बोर्ड, मोबाइल कवर और कॉटन बेडशीट थे। इसके अलावा, इस साल की मेगा ब्लॉकबस्टर सेल के दौरान उपयोगकर्ताओं की संख्या और ऑर्डर दोनों में 40त्न की प्रभावशाली वृद्धि हुई, जो छत्तीसगढ़ में ऑनलाइन खरीदारी के प्रति उत्साह को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त, इस वर्ष राज्य से शामिल होने वाले विक्रेताओं में 90त्न की वृद्धि हुई, जो छत्तीसगढ़ की जीवंत उद्यमशीलता की भावना और ई-कॉमर्स परिदृश्य में बढ़ते अवसरों को दर्शाता है। भारत में ई-कॉमर्स की मांग को अनलॉक करके, मीशो आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए ऑनलाइन खरीदारी को सुलभ और सस्ती बना रहा है।

श्रीराम फाइनेंस ने छत्तीसगढ़ में अपना अभिनव टू-व्हीलर लोन समाधान टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर लॉन्च किया

रायपुर। श्रीराम समूह की प्रमुख कंपनी श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड ने आज टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर लॉन्च करने की घोषणा की, जो इस त्योहारी सीजन में अपने सपनों का टू-व्हीलर खरीदने के इच्छुक ग्राहकों के लिए एक अभिनव और अपनी तरह का पहला टू-व्हीलर लोन समाधान है। श्री. वाई एस चक्रवर्ती, एमडी व सीईओ, श्रीराम फाइनेंस ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा, हमें टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर पेश करते हुए गर्व हो रहा है, जो इस त्यौहारी सीजन में अपने टू-व्हीलर खरीदने का इरादा रखने वाले सभी ग्राहकों के लिए अपनी तरह की पहली पहल है। श्रीराम फाइनेंस छत्तीसगढ़ में सबसे बड़े टू-व्हीलर फाइनेंसरों में से एक है और यह पहल छत्तीसगढ़ में हमारी स्थिति को मजबूत करने और बढ़ाने में मदद करेगी।

श्री. चक्रवर्ती ने आगे बताया, ग्राहक आमतौर पर अपनी पसंद की बाइक खरीदने के लिए रिसर्च करने और उस पर निर्णय लेने में काफी समय लगाते हैं। हालांकि, वे अक्सर फाइनेंसिंग पहलू को नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे लोन प्रदाता चुनने में अनिश्चितता पैदा होती है। बहुत से लोग इस बात से अनजान हैं कि वे अपनी पसंद के टू-व्हीलर के लिए अपनी लोन पात्रता निर्धारित कर सकते हैं। टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर के जरिए ग्राहक आसानी से अपनी लोन पात्रता की जांच कर सकते हैं, जिससे उन्हें अपने सपनों का टू-व्हीलर खरीदने का भरोसा मिलता है और साथ ही फाइनेंसिंग की सुलभ उपलब्धता को लेकर आश्वस्त हो जाते है। टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर को ग्राहक को टू-व्हीलर लोन के लिए उनकी पात्रता, पात्रता राशि, ब्याज दर और तत्पश्चात लोन की अवधि जानने में लगने वाले समय को कम करने के इरादे से बनाया गया है। ग्राहकों को श्रीराम फाइनेंस की वेबसाइट या श्रीराम वन ऐप पर जाना होगा, अपने बारे में तथा जिस टू-व्हीलर को वे खरीदना चाहते हैं उसके बारे में सामान्य विवरण भरना होगा और कुछ ही क्षणों में उन्हें डाउन पेमेंट राशि तथा लोन पात्रता सहित लोन राशि का विवरण मिल जाएगा। इसके बाद उन्हें बस अपना टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर डाउनलोड करके उसे डीलरशिप पर श्रीराम फाइनेंस के प्रतिनिधि के सामने लोन आवेदन स्वीकृति के लिए आवश्यक दस्तावेजों के साथ प्रस्तुत करना होगा और यह प्रक्रिया आमतौर पर 10 मिनट के अंदर पूरी हो जाती है। लोन 24 घंटे में वितरित हो जाता है और ग्राहक अपने सपनों के टू-व्हीलर घर ले जा सकते हैं। श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड ने अपने लक्षित ग्राहकोंतक टू-व्हीलर लोन एलिजिबिलिटी वाउचर की जानकारी पोहोचने के लिए तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल इन 12 राज्यों में एक व्यापक डिजिटल और ऑन-ग्राउंड अभियान की योजना बनाई है।

GOVERNMENT OF CHHATTISGARH,
WATER RESOURCES DEPARTMENT
OFFICE OF THE CHIEF ENGINEER
MAHANADI PROJECT, RAIPUR
(CHHATTISGARH)

e-PROCUREMENT TENDER NOTICE

eProcurement Portal: https://eproc.cgstate.gov.in

(Second Call)

System Tender No. 159416/NIT No.: 10/SAC/24-25 Dated: 03.10.2024

Online Tenders are invited for the following work up to 21.10.2024 at 17.30 Hours.

Name of work - Renovation work of Jawaibandha Diversion Scheme under Khola Tank in Block Abhanpur, District Raipur.

Probable Amount of Contract :- **Rs. 408.35 Lakhs**

(As per S.O.R. dated 01.08.2010 and amended upto dated 22.08.2022).

The details can be viewed and downloaded online directly from the Government of Chhattisgarh Integrated e-Procurement Portal **(https://eproc.cgstate.gov.in) from Date 10.10.2024, at 17.31 Hours (IST) onwards.**

NOTE :- All eligible / interested contractors / bidders are mandated to get enrolled on the Integrated e-procurement portal (https://eproc.cgstate.gov.in) and get approval on specific vendor class from PWD under Centralized Contractor / Supplier Registration in order to download the tender documents and participate in the sub-sequent bidding process. Pre Bid Qualification Certificate valid upto 30.09.2025 is only applicable.

Executive Engineer
Water Management Division No. 1, Raipur
For, Chief Engineer, Mahanadi Project
Raipur (C.G.)

G-242502993/3

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, बुधवार 09 अक्टूबर 2024

मिनी माता सम्मान के लिए प्रविष्टियों की अंतिम तिथि 10 अक्टूबर तक

रायपुर (विश्व परिवार)। विशेष रुप से अनुसूचित जाति/जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक महिलाओं के उत्थान के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाली राज्य की एक महिला/अशासकीय संस्था को %मिनी माता सम्मान (महिला उत्थान) प्रदान किया जाएगा। आवेदन 10 अक्टूबर 2024 तक कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग रायपुर में आमंत्रित किये गये हैं। विज्ञापन एवं संबंधित नियम एवं शर्तों का अवलोकन जिला कार्यक्रम अधिकारी के कार्यालय पुराना पुलिस मुख्यालय परिसर रायपुर के सूचना पटल पर कार्यालयीन समय एवं दिवस पर 10 अक्टूबर 2024 तक किया जा सकता है।

संक्षिप्त समाचार

डिप्टी सीएम अरुण साव ने नवा रायपुर में किया निर्माणाधीन विधानसभा भवन का अवलोकन

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने नवा रायपुर में निर्माणाधीन विधानसभा भवन का अवलोकन किया। अवलोकन के दौरान पीडब्लूडी व निर्माण कंपनी के अधिकारियों तथा कन्सल्टेंट्स से निर्माण कार्य में प्रगति की जानकारी ली। नए विधानसभा का काम अब तक 75 प्रतिशत पूरा हो चूका हैं। उप मुख्यमंत्री ने गुणवत्ता के साथ सभी कार्यों को समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। विधानसभा भवन की लागत 273 करोड हैं और यह 52 एकड़ के क्षेत्र में बन रहा है।

नवरात्रि पर डोंगरगढ़-रायपुर-डोंगरगढ़ के बीच मेमू पैसेजर स्पेशल ट्रेन की सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी माँ बम्लेश्वरी मंदिर, डोंगरगढ में नवरात्रि पर्व (दिनांक 03 से 12 अक्टूबर, 2024 तक) मेला में जाने वाले दर्शनार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये रेलवे प्रशासन द्वारा गाडियों का अस्थायी ठहराव एवं कुछ गाड़ियो का विस्तार की सुविधा प्रदान की जा रही है।
इसी प्रकार डोंगरगढ़ एवं रायपुर के बीच एक मेमू पैसेजर स्पेशल ट्रेन की सुविधा प्रदान की गयी है। डोंगरगढ़ से यह गाड़ी 08 एवं 09 अक्टूबर, 2024 को एवं रायपुर से 07 एवं 08 अक्टूबर, 2024 को चलेने की घोषणा की गयी थी अब इस गाड़ी का विस्तार कर दिनांक 08 से 13 अक्टूबर, 2024 तक चलेगी। जो इस प्रकार है- 08766/08767 डोंगरगढ़-रायपुर-डोंगरगढ़ मेमू पैसेजर स्पेशल की सुविधा प्रदान की गयी है जिसकी समय सारणी इस प्रकार है-

08767 डोंगरगढ़-रायपुर मेमू पैसेजर स्पेशल	स्टेशन	08766 रायपुर - डोंगरगढ़ मेमू पैसेजर स्पेशल
03.40	डोंगरगढ़	23.45
03.50/03.51	जटकनहार	23.28/23.29
03.56/03.57	मुसरा	23.21/23.22
04.03/04.04	बाकल	23.13/23.14
04.12/04.14	राजनान्दगांव	23.02/23.04
04.20/04.21	परमालकसा	22.53/22.54
04.29/04.30	मुरतीपार	22.45/22.46
04.36/04.37	रसमरा	22.37/22.38
04.50/04.55	दुर्ग	22.25/22.30
05.01/05.02	भिलाई नगर	22.11/22.12
05.06/05.08	भिलाई पावर हाउस	22.04/22.06
05.12/05.13	भिलाई	21.59/22.00
05.17/05.18	देवबलोदा चरोदा	21.53/21.54
05.33/05.34	कुम्हारी	21.46/21.47
05.39/05.40	सरोना	21.40/21.41
06.20	रायपुर	21.25

उप मुख्यमंत्री अरुण साव बच्चों के बीच तक्षशिला सेंट्रल लाइब्रेरी पहुंचे, बच्चों से मिलकर उनकी पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के डिप्टी सीएम अरुण साव तक्षशिला सेंट्रल लाइब्रेरी में बच्चों के बीच पहुंचे। जहां बच्चों से मिलकर उन्होंने उनकी पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछा। लाइब्रेरी में उपलब्ध सुविधाओं और किताबों की जानकारी ली और कैंटीन में बच्चों के लिए व्यवस्थाएं देखीं। डिप्टी सीएम श्री साव ने उनके साथ बैठकर फरा-चटनी, सैंडविच और चाय का स्वाद लिया। इसके साथ मल्टी लेवल पार्किंग स्थित बीपीओ सेंटर और जय स्तंभ चौक के पास 'आरंभ' इनक्यूबेशन सेंटर का भी दौरा किया। इसके अलावा युवाओं से बात कर उनके प्रशिक्षण और कार्यों की जानकारी ली। ज्ञात हो की अत्याधुनिक लाइब्रेरी में बायोमेट्रिक सिस्टम के जरिए ही सदस्यों को प्रवेश दिया जाएगा। दो मंजिली बिल्डिंग में 750 पाठकों को एक साथ बैठकर पढ़ने की सुविधा मिलेगी। वर्तमान में 10 हज़ार किताबें उपलब्ध हैं। लाइब्रेरी में डिजिटल रीडिंग जोन भी बनाया गया है। सदस्यों को लिफ्ट की सुविधा मिलेगी। उल्लेखनीय है कि, राजधानी रायपुर में नालंदा लाइब्रेरी की तर्ज पर मोतीबाग में स्मार्ट रीडिंग जोन सह लाइब्रेरी तक्षशिला स्थित है। यह प्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी लाइब्रेरी है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा यहां 24 घंटे पढ़ सकेंगे। उन्हें 11 मार्च से यह सुविधा मिलेगी। अब तक 550 युवाओं ने निर्धारित शुल्क जमा कर सदस्यता ले ली है। इस लाइब्रेरी की क्षमता 750 सीटर है। इसका निर्माण 8.05 करोड़ रुपये से किया गया है।

विजय दशमी के पावन पर्व पर छत्तीसगढ़ नगर दशहरा मैदान में इस बार होगा भव्य कार्यक्रम

रायपुर (विश्व परिवार)। टिकरापारा क्षेत्र के छत्तीसगढ़ नगर दशहरा मैदान में विगत 16 वर्ष की भाती इस वर्ष भी विजय दशमी के पावन पर्व पर विशाल रावण दहन रामलीला का मंचन भव्य इलेक्ट्रानिक आतिशबाजी रात्रि क़ालीन छत्तीसगढ़ के ख्याति प्राप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम रंग झरोखा (दुष्यंत हरमुख कृत) का आयोजन किया जायेगा।

इसी तैयारी को लेकर छत्तीसगढ़ नगर दशहरा उत्सव समिति के अध्यक्ष देवेंद्र यादव के नेतृत्व में होटल प्रकाश पैलेस में बैठक आयोजित कर समिति के सभी सदस्यों गणमान्य नागरिकों की उपस्तिथि में तैयरियों को लेकर सभी से चर्चा एवं सुझाव लिया गया। आगे समिति के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने बताया कि इस बार रावण का पुतला 45 फिट और कुंभकार, मेघनाथ का पुतला 30 फिट का रहेगा। रावण दहन के पूर्व ग्राम सोनपैरी के पुष्पांजलि मानस मंडली द्वारा राम लीला का मंचन शाम 5 बजे से किया जायेगा रावण दहन के पश्चात कालकाता के कलाकार जय तारा स्पेशल इफेक्ट द्वारा इलेक्ट्रॉनिक आतिशबाजी एवं रात्रि में छत्तीसगढ़ी संस्कृति कार्यक्रम रंग झरोखा की प्रस्तुति होगी।

रामकृष्ण केयर अस्पताल की बीएमटी इकाई में पांचवां सफल बोन मैरो ट्रांसप्लांट

रायपुर (विश्व परिवार)। रामकृष्ण केयर अस्पताल के चिकित्सा निदेशक डॉ. संदीप दवे को रामकृष्ण केयर अस्पताल की बीएमटी इकाई में पांचवां सफल बोन मैरो ट्रांसप्लांट की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। यह बोन मैरो ट्रांसप्लांट सुविधा को उच्चतम सफलता दर और किफायती लागत पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया है।

बीएमटी इकाई के प्रभारी और वरिष्ठ ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. रवि जायसवाल ने बताया कि भिलाई के 59 वर्षीय सज्जन एनीमिया (कम एचबी), गुर्दे की विफलता (बढ़ी हुई क्रिएटिनिन), पीठ दर्द (रीढ़ की हड्डी में दबाव) से पीड़ित थे और जांच के बाद पता चला कि उन्हें मल्टीपल मायलोमा (रक्त कैंसर का एक प्रकार) है, जिसके लिए उन्हें 16 सप्ताह तक साप्ताहिक लक्षित दवाओं और इम्यूनोथेरेपी (डाराटुमुमैब) के संयोजन से उपचार दिया गया। बीमारी के नियंत्रण में आने के बाद बोन मैरो ट्रांसप्लांट करने का निर्णय लिया गया, क्योंकि इससे अधिकतम जीवन दर मिलती है।

इस चुनौती को स्वीकार करते हुए डॉ. रवि जायसवाल (ऑन्कोलॉजिस्ट), डॉ. रूना (ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग) डॉ. विशाल कुमार (क्रिटिकल केयर और ट्रांसप्लांट आईसीयू) और अस्पताल के विभिन्न विभागों ने मिलकर काम किया। इस प्रक्रिया के लिए डॉ. जायसवाल ने बताया कि साइटोटॉक्सिक दवा के संक्रमण से पहले स्वयं के शरीर की स्टेम कोशिकाओं को संरक्षित किया जाता है और संरक्षित स्टेम कोशिकाओं को रोगियों के शरीर में फिर से संक्रमित किया जाता है। रोगी के अस्थि मज्जा में स्टेम कोशिकाओं को प्रत्यारोपित करने में लगभग 12 दिन लगते हैं। पिछले दो सप्ताह की अवधि रोगी के लिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि वह प्रतिरक्षाविहीन अवस्था में था और संक्रमण से ग्रस्त था। चूंकि राज्य में ल्यूकेमिया, लिम्फोमा, मायलोमा के मामले लगातार बढ़ रहे हैं, इसलिए डॉ. जायसवाल और रामकृष्ण केयर अस्पताल में उनकी टीम छत्तीसगढ़ और आसपास के राज्यों के नागरिकों को विश्व स्तरीय कैंसर देखभाल प्रदान करने के लिए लगातार कड़ी मेहनत कर रही है।

प्रत्येक अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण मामले में अनूठी चुनौतियां होती हैं और पिछले 8 वर्षों में पर्याप्त अनुभव प्राप्त करने के बाद हम सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार हैं, डॉ. जायसवाल ने निष्कर्ष निकाला। रोगी पूरी तरह से ठीक हो गया और 15वें दिन अस्पताल से सफलतापूर्वक छुट्टी दे दी गई।

आठ आईएएस अधिकारियों का तबादला

रायपुर (आरएनएस)। राज्य शासन ने भारतीय प्रशानिक सेवा के अधिकारियों का तबादला आदेश जारी किया है। राज्य में सेवारत आठ भाप्रसे अफसरों को उनके वर्तमान दायित्वों के साथ अन्य प्रभारी भी सौंपे गए है।

जारी सूची के अनुसार अन्बलगन पी सचिव पर्यटन एवं संस्कृति विभाग से सचिव धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग तथा सचिव सामान्य प्रशासन विभाग के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त करते हुए सचिव खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। टोपेश्वर वर्मा सचिव राजस्व मंडल बिलासपुर को अस्थाई रूप से सदस्य राजस्व मंगल बिलासपुर के पद पर पदस्थ करते हुए अध्यक्ष राजस्व मंडल बिलासपुर का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। के डी कुंजाम विशेष सचिव, खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग को विशेष सचिव राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग के पद पर पदस्थ करते हुए विशेष सचिव धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग एवं संचालक मुद्रण एवं लेखन सामाग्री का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। रमेश कुमार वर्मा विशेष सचिव राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग को प्रबंध संचालक मार्कफेड के पद पर पदस्थ किया गया है। नान के संचालक जितेंद्र कुमार शुक्ला को वेयरहाउसिंग कार्पोरेशन के एमडी का अतिरिक्त प्रभार दिया गया हैं।

विनीत नंदनवार संयुक्त सचिव मंत्रालय को संचालक भू अभिलेख के पद पर पदस्थ करते हुए संयुक्त सचिव जनशिकायत एवं निवारण विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। इसी तरह डॉ. फरिहा आलम उप सचिव स्कूल शिक्षा विभाग को उनके वर्तमान कर्तव्यों के साथ सचिव श्रम विभाग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया

बचेली (विश्व परिवार)। एनएमडीसी बैलाडीला आयरन ओर माइन, बचेली कॉम्प्लेक्स में दिनांक 08 अक्टूबर 2024 को प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में श्री बी वेंकटेश्वरलु, अधिशासी निदेशक के मुख्य आतिथ्य में राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया।

इस समारोह में सभी विभागाध्यक्ष, एसकेएमएस एवं एमएमडब्लयूयू के अध्यक्ष, सचिव एवं पुरस्कार विजेताओं अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विभिन्न विद्यालयों के विजेता प्रतिभागी शिक्षकों की उपस्थिति रही।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 14 सितंबर 2024 से 29 सितंबर 2024 तक परियोजना प्रमुख श्री बी वेंकटेश्वरलु, अधिशासी निदेशक के मार्गदर्शन, श्री महेश नायर, महाप्रबंधक (कार्मिक) सह सर्वकार्यभारी अधिकारी राजभाषा के समन्वय एवं श्री सौरभ चढ़ार, सहायक प्रबंधक (राभा) के नेतृत्व में राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस तारतम्य में श्री सौरभ चढ़ार, राजभाषा अधिकारी ने बताया कि इस वर्ष बीआईओएम, बचेली इकाई संकुल में भारत सरकार की राजभाषा नीति के दिशा-निर्देशों के अनुरूप राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस वर्ष भी 14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस पर अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में हुआ था। इस अवधि में बीआईओएम, बचेली कॉम्प्लेक्स के अधिकारियों, कर्मचारियों, गृहणियों एवं शिक्षकों हेतु हिन्दी निबंध, हिन्दी टंकण, अनुवाद, वस्तु देखें एवं लिखें, कविता लेखन एवं लिखित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं।

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह में मुख्य अतिथि के करकमलों से वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु सिविल विभाग को राजभाषा श्रेष्ठता प्रमाणपत्र, वित्त विभाग को राजभाषा शील्ड एवं खनन विभाग निक्षेप क्र. 5 को राजभाषा कप प्रदान किए गए। तत्पश्चात राजभाषा पखवाड़ा में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किए गए।

मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों ने राजभाषा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा का प्रचार-प्रसार निगम एवं परियोजना में अविरत रूप से किया जा रहा है। हिंदी भाषा में अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली है। स्वागत उद्बोधन श्री महेश एस नायर, महाप्रबंधक (कार्मिक) ने किया तथा श्रमिक संघों के पदाधिकारियों ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन श्री सौरभ चढ़ार, सहायक प्रबंधक (राभा) एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री सौरभ कुमार, उप महाप्रबंधक (कार्मिक) द्वारा किया गया।

प्रधानमंत्री आवास से मिली खुशियों की चाबी

रायपुर (विश्व परिवार)। हर इंसान का एक सपना होता है कि उसका एक अपना खुद का पक्का मकान हो सिर पर घर की अपनी पक्की छत हो ताकि उसका परिवार बहुत ही सुरक्षित हो सुविधाजनक ढ़ंग से रह बस सके। रायपुर जिला अंतर्गत जनपद पंचायत आरंग में हितग्राहियों को प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण अंतर्गत आवास की चाबी एवं पूर्णता प्रमाण पत्र सौपा गया। नये हितग्राहियों को स्वीकृति आदेश प्रदाय किया गया। सभी हितग्राहियों के चेहरे पर नये घर मिलने की खुशी साफ झलक रही थी। कच्चे घर में होने वाली परेशानी अब पक्के घर में दूर होने से चेहरे पर सुकुन था। अपनी सुविधा और सामर्थय से बढ़कर इंसान अपने परिवार के लिए घर की बुनियाद रखता है और अपने सपनों का संसार सजाता है। प्रधानमंत्री आवास योजना के नए हितग्राहियों को आवास निर्माण के संबंध में विभिन्न प्रकार की जानकारियां दी गई। जिससे आवास निर्माण समयावधि में गुणवश्रायुक्त निर्माण कर सके। सभी हितग्राहियों को बताया गया कि आवास की राशि का उपयोग आवास निर्माण में करें ताकि आगे किसी भी प्रकार की समस्या न हो।

नालियों की सफाई नहीं होने से मलेरिया के मरीज बढ़ रहे

रायपुर (विसं)। शहर के वार्डो में गलियों में सफाई व्यवस्था कायम नहीं होने के कारण गंदगी फैली हुई है जिसकी वजह से आम आदमी मलेरिया, बुखार, डेंगू आदि की चपेट में आने से आए दिन बीमार पड़ रहा है। शहर के पुराने मोहल्लों गलियों में नालियों की सफाई नहीं होने के कारण संक्रमण फैल रहा है।

जलने के बाद
पुन :निर्माण सर्जरी
(रिकंस्ट्रक्शन)

कालड़ा बर्न एवं
प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न
Food Licence
इन्कम TAX फाईल
M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड
प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस
डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

राय ज्वेलर्स
महाबचत योजना
मात्र 1000 /- रु. से शुरु करे
15 माह
20 माह
25 माह
स्कीम जिसमें आपकी छोटी बचत, महाबचत बनकर महालाभांश
मौका ना चुके आज ही मेम्बर बने
के साथ आपको अन्य फायदे भी प्रदान करेगी
मात्र 7% मेकिंग चार्जेस, में हॉलमार्क वाले जेवर दिये जाते हैं
यह ऑफर केवल सीमित समय के लिये, नवरात्रि से दीपावली तक
5 से 6 हजार की बचत, प्रति तोले में पायें
छत्तीसगढ़ में सबसे कम मेकिंग चार्ज में
राय ज्वेलर्स
पुराना बाजार, सांई मंदिर के पास माना कैम्प, रायपुर
9753056459, 8269654211, 8085423006